7

दी नेक्स्ट पोस्ट

साप्ताहिक

3 गोरखपुर में आग का कहर जारी, फसल झोपड़ी और गुमटी जलकर राख

5 लालजी टंडन के बेटे का पत्ता साफ

8 जोस बटलर की पारी नरेन पर भारी राजस्थान रॉयल्स से केकेआर हारी

UPHIN51019 | वर्षः 01, अंकः 39 | पृष्ठ संख्याः 8 | मूल्यः 1.00 रू. | सोमवार 22 अप्रैल, 2024

यूपी बोर्ड के परिणाम जारी

10वीं का 89.55 प्रतिशत और 12वीं का 82.60 प्रतिशत रहा रिजल्ट

प्रयागराज। यूपी बोर्ड से हाई स्कूल एवं इंटरमीडिएट बोर्ड एग्जाम रिजल्ट का इंतजार अब खत्म हो गया है। छात्र–छात्राओं को लंबे समय से इसका इंतजार था और आखिरकार ये इंतजार खत्म हो गया।

षनिवार को कार्यालय सचिव, माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश, प्रयागराज की ओर से दसवीं और बारहवीं के रिजल्ट जारी कर दिया है।

यूपी बोर्ड के दसवीं और बारहवीं बोर्ड के रिजल्ट को छात्र–छात्रा ऑफिशियल वेबसाइट तमेनसजे.नचउेच.मकन.पद पर देख सकते हैं। इसके बाद आप रोल नंबर दर्ज करके अपने नतीजे चेक करने के साथ ही मार्कशीट की प्रति डाउनलोड कर सकते हैं।

इतने प्रतिशत रहा रिजल्ट

यूपी बोर्ड मुख्यालय प्रयागराज में उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद के सभापति डॉक्टर महेंद्र देव एवं यूपी बोर्ड सचिव दिव्य कांत शुक्ला ने प्रेस कांफ्रेंस करके रिजल्ट जारी किया। हाईस्कूल का 89.55 प्रतिशत और इंटर का रिजल्ट 82.60 प्रतिशत रहा।

ये रहे टॉपर

हाई स्कूल में प्राची निगम और इंटर में शुभम वर्मा ने किया टॉप। दोनों सीता बाल विद्या मंदिर महमूदाबाद सीतापुर के हैं।

पिछले साल ऐसा रहा था रिजल्ट

पिछले वर्ष 10वीं कक्षा में प्रियांशी सोनी ने 590 अंक हासिल कर राज्यभर में शीर्ष स्थान हासिल किया था। पिछले वर्ष के टॉपर्स के नाम निम्नलिखित हैं –

प्रियांशी सोनी–590 अंक
प्रियांशी सोनी–590 अंक
कुशाग्र पांडेय–587 अंक
मिश्कत नूर–587 अंक
कृष्णा झा–586 अंक
अर्पित गंगवार–586 अंक
श्रेयांशी सिंह–586 अंक
आंशिक दुबे–585 अंक
सक्षम तिवारी–585 अंक
पियूष सिंह–585 अंक।

मैनपुरी में भीषण सड़क हादसा: ट्रक ने ट्रैक्टर-ट्राली में मारी टक्कर

मैनपुरी । मैनपुरी के भोगांव में शनिवार सुबह भीषण सड़क हादसे में चार महिलाओं की मौत हो गई, जबकि 24 लोगों के घायल होने की सूचना है। बताया गया है कि ट्रक ने सड़क किनारे खड़े ट्रैक्टर–ट्रॉली में टक्कर मार दी। ट्रॉली में महिलाएं और पुरुष सवार थे जो नामकरण संस्कार से शामिल होकर लौट रहे थे। रास्ते में ये हादसा हो गया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने सभी घायलों को उपचार के लिए अस्पताल भेजा है।

नामकरण संस्कार से लौट रहे थे सभी

कन्नौज के थाना छिबरामऊ क्षेत्र में स्थित गांव कुंवरपुर निवासी वीरेंद्र सिंह की पुत्री की थाना बिछवां के गांव बेलधारा में शादी हुई है। उनकी पुत्री ने 10 दिन पहले पुत्र को जन्म दिया था। शुक्रवार को उसका नामकरण संस्कार था। वीरेंद्र सिंह अपने परिवारीजनों के साथ ट्रैक्टर ट्रॉली से गांव बेलधारा गए थे। शनिवार सुबह करीब साढ़े चार बजे सभी लोग ट्रैक्टर–ट्रॉली में बैठकर वापस घर लौट रहे थे। भोगांव क्षेत्र में द्वारकापुर के पास ट्रैक्टर की लाइट खराब हो गई।

इस तरह हुआ हादसा

चालक ने ट्रैक्टर को सड़क किनारे खड़ा कर दिया और लाइट की मरम्मत करने लगा। तभी पीछे से आ रहे ट्रक ने ट्रॉली में टक्कर मार दी, जिससे ट्रॉली पलट गई। ट्रॉली में बैठी फूलमती पत्नी अवधेश, रमाकांति पत्नी दफेदार, संजय देवी पत्नी राजेश की मौके पर ही मौत हो गई। जबकि 25 लोग घायल हो गए। मौके पर पहुंची पुलिस ने घायलों को अस्पताल पहुंचाया, जहां द्रोपदी देवी पत्नी विशुन दयाल ने भी दम तोड़ दिया। सभी मृतक और घायल गांव कुंवरपुर छिबरामऊ के निवासी हैं।

प्रत्याशियों के भाग्य का निर्णय ईवीएम में कैद

सम्पादकीय

असत्य को स्वीकार्यता दिलाने के चक्कर में मोदी के बड़े झूठ

18वीं लोकसभा के चुनावों का आगाज़ होने में दो ही दिन रह गये हैं

इतने वक्त के बाद भी अगर मोदी ने थांती, असम ट्रिब्यूनल व एएनआईई से खुलकर बातें की हैं तो क्या उन्होंने सब कुछ सच–सच कहा है? कई बातों की परतें तो तब खुलतीं अगर मोदी से पत्रकारों द्वारा पूरक सवाल किये जाते। सवालों के उत्तरों पर प्रति प्रश्न होते तो मोदी शायद ही टिक पाते और उन्हें अपने ज्यादातर कामों व निर्णयों का औचित्य साबित करना मुश्किल हो जाता।

18वीं लोकसभा के चुनावों का आगाज़ होने में दो ही दिन रह गये हैं। 7 चरणों में होने जा रहे आम चुनाव के लिये मतदान का पहला चरण शुक्रवार को होगा। ऐसे में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी धुआंधार प्रचार सभाएं तो कर ही रहे हैं, वे पिछले करीब 10 वर्षों से जारी अपनी कार्यपद्धति से हटकर कुछ नया तरीका अपना रहे हैं– वह है मीडिया से मुखातिब होना। वे वर्तमान परिस्थितियों एवं घटनाक्रमों पर बाकायदे जवाब भी देते नज़र आ रहे हैं। कम से कम ऊपर से तो यही दिखाई देता है कि वे ठोस तथ्यों पर आधारित सवालों का जवाब दे रहे हैं। ये वे प्रश्न हैं जो उनके आम खाने के तरीके से परे हटकर हैं, उनके चेहरे की चमक का राज़ जानने से भी अलग हैं। ये सवाल ऐसे भी हैं जिनमें उनके 18–18 घंटे काम करने के बावजूद न थकने की जिज्ञासा भी नहीं है। हालांकि उनके हाल के साक्षात्कारों को लेकर पूरी सम्भावना है कि प्रश्नावली उनकी सहमति से तैयार हुई होगी। जो हो, मान लिया जाये कि उनके हालिया तीन साक्षात्कार जो तमिल चैनल 'थांती', 'असम ट्रिब्यूनल' एवं सोमवार को प्रसारित समाचार एजेंसी 'एएनआई' में प्रसारित–प्रकाशित हुए हैं, वे पत्रकारों द्वारा पेशेवरना ईमानदारी से लिये गये और मोदी ने भी बतौर पीएम खुले मन से तथा सवालों की सूची से छेड़छाड़ किये बिना आये प्रश्नों के जवाब दिये हैं। थांती व असम ट्रिब्यूनल का प्रभाव क्षेत्र एएनआई के मुकाबले सीमित है। इसलिये मोदी को लगा होगा कि इससे काम नहीं चलने वाला है, सो उन्हें एक ऐसे चैनल में इंटरव्यू की आवश्यकता महसूस हुई होगी जिसकी उपस्थिति देशव्यापी प्रतीत होती हो। वैसा है भी। उनके मीडिया के प्रति विलम्ब से उपजे अनुराग को देखते हुए यह भी सम्भावना व्यक्त की जा सकती है कि आने वाले समय में कुछ और प्रकाशन या चैनल उनके इंटरव्यू प्रकाशित–प्रसारित करें। देश का मुखिया अगर यह नयी आदत विकसित करे तो इसका स्वागत होना चाहिये। वैसे भी जब मोदी पीएम नहीं थे तो तमाम अखबारों व चैनलों से लम्बी–चौड़ी वार्ताएं कर यह बतलाते ही रहते थे कि कैसे डॉ. मनमोहन सिंह एक कमजोर पीएम हैं। महंगाई, बेरोजगारी, डॉलर के सामने रुपये की गिरती कीमत, पाकिस्तान व चीन की सीमाओं पर उठती समस्याओं के उनके पास तैयार नुस्खे हुआ करते थे। यह अलग बात है कि अपने दो कार्यकालों के दौरान सतत चुनावी मोड में रहने तथा पूरा फोकस 'ऑपरेशन लोटस' जैसे महत्वपूर्ण अभियानों में उलझे रहने के कारण उन्हें उपरोक्त उल्लिखित अपेक्षाकृत गौण विषयों की ओर ध्यान देने का वक्त नहीं मिल पाया। शायद इसीलिये अब उन्हें तीसरे टर्म की सख्त दरकार है।

मुद्दा तो यह है कि पूरे 10 वर्षों तक मीडिया से दूरी बनाये रखने वाले मोदी को ऐसा क्योंकर महसूस होने लगा कि उन्हें मीडिया से उन विषयों पर बात करनी चाहिये जिसका सरोकार वर्तमान सन्दर्भों से है। ये ऐसे मुद्दे हैं जिन पर मोदी अपनी प्रचार सभाओं में तो क्या संसद के भीतर भी बात करना पसंद नहीं करते, जो कि उनका संवैधानिक कर्तव्य ही नहीं जवाबदेही भी है। पिछले दस वर्षों में उन्होंने यही किया है कि संसद में मुद्दों पर पूछे गये सवालों को कांग्रेस के परिवारवाद, विपक्षियों के भ्रष्टाचार, सबको जेल भेजने, अगले 25 वर्षों का रोड मैप बनाने, 2047 तक भारत को दुनिया का सबसे विकसित देश बनाने जैसे आधारहीन विषयों से जोड़ देते हैं। संसद के भीतर पूछे गये सवालों के जवाब वे सत्र के दरम्यान भी बाहर होने वाली पार्टी रैलियों और सभाओं में देने का हौसला व महारत संजोये हुए हैं।

यहां असली बात है मोदी के सभी पैंतरों के नाकाम होने का भय और उनकी सरकार द्वारा लाये गये इलेक्टोरल बॉन्ड्स के जरिये हुए भ्रष्टाचार का पर्दाफाश होना जिसमें केन्द्रीय जांच एजेंसियों का जमकर दुरुपयोग किया गया है। घोटालों के नाम पर विपक्षियों को थोक के भाव से जेल भेजने के उनके षड्यंत्र सहित कई–कई कृत्यों का उजागर होना मोदी को परेशानी में डाल रहा है। फिर, पूरे समय व्यक्तिवादी व आत्मकेन्द्रित राजनीति करने के कारण मोदी अब पूरी तरह से अकेले हैं। अधिक से अधिक केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह उनके साथ हैं। उनका बचाव अब कोई दूसरा नेता भी करता नहीं दिख रहा है। ऐसे में उन्हें इस मीडिया की शरण लेनी पड़ी है।

दूसरा सवाल यह भी है कि इतने वक्त के बाद भी अगर मोदी ने थांती, असम ट्रिब्यूनल व एएनआईई से खुलकर बातें की हैं तो क्या उन्होंने सब कुछ सच–सच कहा है? कई बातों की परतें तो तब खुलतीं अगर मोदी से पत्रकारों द्वारा पूरक सवाल किये जाते। सवालों के उत्तरों पर प्रति प्रश्न होते तो मोदी शायद ही टिक पाते और उन्हें अपने ज्यादातर कामों व निर्णयों का औचित्य साबित करना मुश्किल हो जाता। मसलन, यदि उन्होंने इलेक्टोरल बॉन्ड्स को पारदर्शी बनाया है तो क्या वे पीएम केयर फंड को भी ऐसा ही खुला बनायेंगे जिसके बारे में कोई भी जो कुछ चाहे जान सकता है? यदि वे इसे पारदर्शी बना चुके थे तो सुप्रीम कोर्ट तक यह मामला पहुंचा ही क्यों? क्यों नहीं मोदी सरकार पूरी स्पष्टता व चर्चा के साथ इस योजना को लेकर आई? आखिर यह योजना सभी दलों के लाभार्थ बनी थी तो उनकी राय क्यों नहीं ली गई? फिर, कोर्ट द्वारा मांगी गई जानकारी देने में स्टेट बैंक ऑफ इंडिया द्वारा इतनी आनाकानी क्यों की गयी? व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखें तो मोदी सरकार ने सूचना के अधिकार को इतना कमजोर कर दिया है कि लोगों की पहुंच से सरकारी कामकाज दूर हो गया है।

मोदी के साक्षात्कार में यह भी दावा है कि वे तीसरा कार्यकाल जिन बड़े कामों को पूरा करने के लिये चाहते हैं, वे किसी को डराने के लिये नहीं है। उनका यह दावा उनके अपने लोगों के उन बयानों से मेल नहीं खाता जिनमें वे कहते हैं कि भारतीय जनता पार्टी को 400 सीटें इसलिये चाहिये क्योंकि संविधान को बदलना है। अनंत हेगड़े, ज्योति मिर्धा, लल्लू सिंह, अरूण गोविल आदि कई नेता–उम्मीदवार इस आशय की बातें कह चुके हैं। मोदी का अगर संविधान को बदलने का इरादा नहीं है तो वे पार्टी सहयोगियों को ऐसा कहने से मना क्यों नहीं करते? आज पूरे देश में इस बात का भय है कि भाजपा के 400 पार के नारे का प्रयोजन ही संविधान को बदलना है जिसकी पहली बलि आरक्षण व्यवस्था की होगी। इसी प्रकार, जैसा कि मोदी कह रहे हैं कि जिन पर जांच एजेंसियों के छापे पड़ रहे हैं उनमें से ज्यादातर गैर राजनीतिक लोग हैं, तो लोग देख रहे हैं कि अनेक राजनीतिज्ञ एवं गैर भाजपायी मुख्यमंत्री, पूर्व मुख्यमंत्री, उप मुख्यमंत्री जेलों में भेजे जा चुके हैं। इस साक्षात्कार में छोटे–मोटे कई ऐसे तथ्य भरे पड़े हैं जिन पर विश्वास करना सम्भव नहीं है।

इस तरह देखें तो अपने असत्यों व अर्द्धसत्यों को मीडिया की आड़ में छिपाते मोदी और भी बड़े झूठ बोल रहे हैं जो प्रधानमंत्री पद पर बैठे व्यक्ति के लिये न तो गरिमामय है और न ही उचित। वे यह भी भूल जाते हैं कि शासक का झूठ तभी तक चलता है जब तक कि उसके हाथों में शक्ति व मशीनरी होती है। यह शक्ति–मशीनरी उस वक्त बेकार हो जाती है जब जनता जाग उठती है। ऐसा होने पर मोदी की अलमारी से झूठ के अनेक कंकाल बाहर आएंगे।

अठारहवीं लोकसभा के करीब पौने दो महीने लंबे चुनाव के पहले चरण का चुनाव प्रचार अभी थमा नहीं है

प्रधानमंत्री चुनाव के लिए धर्म की दुहाई का सहारा ले रहे हैं, जो बेशक आदर्श चुनाव संहिता का ही नहीं, जन–प्रतिनिधित्व कानून का भी गंभीर उल्लंघन है। वास्तव में देश का कानून ऐसी किसी राजनीतिक पार्टी की मान्यता की ही इजाजत नहीं देता है, जो संविधान की उद्देशिका में शामिल धर्मनिरपेक्षता का पालन नहीं करती हो। अठारहवीं लोकसभा के करीब पौने दो महीने लंबे चुनाव के पहले चरण का चुनाव प्रचार अभी थमा नहीं है। लेकिन प्रधानमंत्री मोदी द्वारा अपनी चुनाव सभाओं में धर्म की दुहाई का सहारा लिए जाने की शिकायतों के चुनाव आयोग में ढेर लग चुके हैं। संक्षेप में इन शिकायतों का सार यही है कि प्रधानमंत्री, विशेष रूप से राम मंदिर के निर्माण तथा प्राण प्रतिष्ठा समारोह से लेकर, सनातन संबंधी बहस तक के बहाने से, खुद को तथा सत्ताधारी गठजोड़ को 'हिंदू–रक्षक' और अपने राजनीतिक विरोधियों, विशेष रूप से इंडिया गठबंधन को 'हिंदू–विरोधी' साबित करने और इसके जरिए, हिंदुओं को अपने विरोधियों के खिलाफ तथा अपने पक्ष में जुटाने की कोशिश कर रहे थे। बेशक, यह दूसरी बात है कि मोदी राज में अर्जित अपने संक्षिप्त नाम, कें चु आ को सार्थक करते हुए, चुनाव आयोग ने इन शिकायतों का कोई संज्ञान लिया हो, इसका अब तक कोई संकेत नहीं है।

सच तो यह है कि ये शिकायतें करते हुए विपक्ष को, इसका कोई भ्रम भी नहीं था कि चुनाव आयोग, खासतौर पर प्रधानमंत्री पर आदर्श आचार संहिता की चुनाव के लिए धर्म की दुहाई का सहारा लिए जाने पर रोक के उल्लंघन के आरोपों पर कोई कार्रवाई कर सकता है। पिछले आम चुनाव के समय के और उसके बाद के पूरे दौर के अनुभवों के बाद, ऐसे किसी भ्रम की गुंजाइश ही नहीं रह गयी है। और चुनाव की तारीखों की घोषणा से ऐन पहले, एक चुनाव आयुक्त के संदेहजनक परिस्थितियों में चुनाव आयोग से इस्तीफा देने और उसके बाद हाथों–हाथ मोदी सरकार द्वारा तीन सदस्यीय आयोग के लिए दो सदस्यों की अपनी मर्जी से नियुक्ति किए जाने के बाद, तो किसी भ्रम की रत्तीभर गुंजाइश नहीं बची थी। याद रहे कि चुनाव आयोग की इन दोनों रिक्तियों के भरे जाने से पहले ही, मोदी सरकार द्वारा एक कानून बनाकर, सुप्रीम कोर्ट के उस फैसले को पलटा जा चुका था, जिसमें चुनाव आयोग की निष्पक्षता सुनिश्चित करने पर विशेष रूप से जोर देते हुए, आयोग के अध्यक्ष व सदस्यों की नियुक्ति के लिए ऐसी प्रक्रिया अपनाए जाने का तकाजा किया गया था, जिससे इन नियुक्तियों में सिर्फ सरकार की मर्जी चलने के बजाय, निष्पक्षता की अपेक्षा की जा सके। इस सिलसिले में सुप्रीम कोर्ट ने फौरी कदम के तौर पर एक तीन सदस्यीय नियुक्ति समिति का गठन करने के लिए कहा था, जिसमें प्रधानमंत्री के साथ, लोकसभा में विपक्ष के या सबसे बड़ी विपक्षी पार्टी के नेता के अलावा, सुप्रीम कोर्ट के प्रधान न्यायाधीश भी रहें।

बहरहाल, सुप्रीम कोर्ट के उक्त निर्णय में ही वैधानिक आधार पर नियुक्ति प्रक्रिया का फैसला संसद पर छोड़े जाने को बहाना बनाकर, नरेंद्र मोदी सरकार ने अपने बहुमत का दुरुपयोग कर, फटाफट संसद से कानून बनवाकर, यह सुनिश्चित किया कि चुनाव आयोग के लिए नियुक्तियों में सरकार की ही मनमर्जी चले। तीन सदस्यीय कमेटी में, प्रधानमंत्री के साथ, विपक्ष के नेता को शामिल तो किया गया, लेकिन प्रधानमंत्री को तीसरे सदस्य के रूप में अपने किसी मंत्रिमंडलीय सहयोगी को रखने का अधिकार देकर, विपक्ष की आवाज को गैर–निर्णायक और वास्तव में रस्म अदायगी भर बना दिया गया। दूसरी ओर, सर्वोच्च न्यायालय के प्रधान न्यायाधीश को इस पूरी प्रक्रिया से बाहर ही कर दिया गया। तीन सदस्यीय आयोग में अध्यक्ष से इतर दोनों नयी नियुक्तियां, इस प्रकार सरकार की मर्जी का ही प्रतिनिधित्व करने वाली व्यवस्था से ही कराई गई थीं, जबकि इससे पहले स्थान खाली होने के बावजूद, सुप्रीम कोर्ट द्वारा गठित उक्त कमेटी के सामने, जिसमें सुप्रीम कोर्ट के प्रधान न्यायाधीश को भी रहना था, किसी नियुक्ति का विषय आने ही नहीं दिया गया था।

बहरहाल, बात सिर्फ इतनी ही नहीं है कि प्रधानमंत्री चुनाव के लिए धर्म की दुहाई का सहारा ले रहे हैं, जो बेशक आदर्श चुनाव संहिता का ही नहीं, जन–प्रतिनिधित्व कानून का भी गंभीर उल्लंघन है। वास्तव में देश का कानून ऐसी किसी राजनीतिक पार्टी की मान्यता की ही इजाजत नहीं देता है, जो संविधान की उद्देशिका में शामिल धर्मनिरपेक्षता का पालन नहीं करती हो। फिर भी यह गौरतलब है कि यह प्रधानमंत्री द्वारा कैजुअल तरीके से, किसी एकाध भाषण में धर्म की दुहाई का चुनाव के लिए सहारा लिए जाने भर का मामला नहीं है। वास्तव में इस बार इसकी शुरूआत औपचारिक रूप से चुनाव अभियान शुरू होने से भी काफी पहले से ही कर दी गई थी। राज्य विधानसभाई चुनावों के पिछले चक्र के फौरन बाद ही, पहले राम मंदिर के उद्घाटन और फिर तथाकथित 'सनातन' विवाद के बहाने, हिंदू–धार्मिकता की दुहाई का इस्तेमाल शुरू कर दिया गया था। प्रधानमंत्री ने आम चुनाव की घोषणा के बाद, औपचारिक रूप से अपना चुनाव अभियान शुरू होने के बाद, इस सिलसिले को सिर्फ जारी ही नहीं रखा है, सांप्रदायिक दुहाई को अपने चुनाव प्रचार का केंद्रीय हिस्सा ही बना दिया है। कहने की जरूरत नहीं है कि इसमें सारा जोर, राम मंदिर के उद्घाटन समारोह से दूर रहने के लिए और 'सनातन' के संबंध में आलोचनात्मक टिप्पणी करने वालों से नाता बनाए रखने के लिए, इंडिया गठबंधन तथा भाजपा/एनडीए के विरोधियों को 'हिंदू–विरोधी' साबित करने पर ही रहा है। यानी यह प्रधानमंत्री के चुनाव प्रचार की प्रधान थीम ही है, जिसकी प्रतिध्वनि प्रधानमंत्री के चुनावी भाषणों से लेकर, भाजपा के चुनाव घोषणापत्र के जारी किए जाने के कार्यक्रम और उसके फौरन बाद, एक निजी समाचार एजेंसी के लिए प्रधानमंत्री के पूरी तरह से स्क्रिप्टेड इंटरव्यू तक में सुनाई दे रही थी।

बहरहाल, यह भी अर्थहीन ही नहीं है कि जैसाकि हमने शुरू में ही याद दिलाया, चुनाव प्रचार के पहले चरण से ही प्रधानमंत्री मोदी ने चुनाव के लिए धर्म की दुहाई का इस्तेमाल शुरू कर दिया है। बेशक, यह किसी से छुपा हुआ नहीं है कि धर्म की दुहाई का और एक उग्र माइनोरिटी–विरोधी छवि का उपयोग, नरेंद्र मोदी के साथ शुरू से ही और 2002 के गुजरात के मुस्लिम–विरोधी नरसंहार के बाद से तो खासतौर पर जुड़ा रहा है। इसके बावजूद, 2014 के चुनाव में जब नरेंद्र मोदी पहली बार प्रधानमंत्री पद के लिए अपने दावेदारी पेश कर रहे थे, इस छवि का सावधानी के साथ उपयोग करते हुए भी उन्होंने, सांप्रदायिक छवि को पीछे रखने की कोशिश की थी। मकसद यही था कि जहां माइनोरिटी–विरोधी छवि के बल पर, संघ–भाजपा के हिंदुत्ववादी सांप्रदायिक आधार को मजबूत किया जाए, वहीं अच्छे दिन के सब्ज बाग के सहारे, समर्थन का दायरा अपने परंपरागत आधार से आगे बढ़ाया जाए। इसी दोमुंही नीति का उदाहरण पेश करते हुए, उत्तर प्रदेश में मुजफ्फरनगर के 2013 के दंगों के बदनाम आरोपियों को भाजपा का टिकट भी दिया गया, लेकिन खुद प्रधानमंत्री मोदी ने उनसे तिनके की ओट की दूरी दिखाने की भी कोशिश की। उनकी चुनावी रैली के मंच पर इन सांप्रदायिक योद्घाओं का अभिनंदन तो किया गया, लेकिन मोदी के मंच पर आने से पहले–पहले। बहरहाल, चुनाव प्रचार के आखिरी दौर तक पहुंचते–पहुंचते, उस चुनाव में भी नरेंद्र मोदी ने श्वेत क्रांति बनाम गुलाबी या मांस क्रांति का द्वैध खड़ा करने और मांस क्रांति के बहाने अल्पसंख्यक–विरोधी संदेश देने का सहारा लेना शुरू कर दिया था।

आगे चलकर उत्तर प्रदेश के विधानसभाई चुनाव के समय भी, प्रचार के आखिरी दौर में, सब कुछ झोंकने की मुद्रा में प्रधानमंत्री मोदी ने, शमशान बनाम कब्रिस्तान और दीवाली बनाम रमजान का खुल्लमखुल्ला सांप्रदायिक द्वैध खड़ा करने की कोशिश की थी। एक हद तक ऐसा ही 2019 के आम चुनाव में भी देखने को मिला, जब पुलवामा प्रकरण से उभारी गई राष्ट्रवादी भावनाओं के साथ सांप्रदायिक इशारे जोड़ने पर ही ज्यादा ध्यान केंद्रित करने के बाद, चुनाव प्रचार के आखिरी चरणों में ही प्रधानमंत्री ने खुले सांप्रदायिक इशारों का सहारा लिया। लेकिन, 2024 के चुनाव में स्थिति, इससे बहुत बदली हुई नजर आ रही है।

चुनाव प्रचार की शुरूआत से ही प्रधानमंत्री मोदी ने धर्म की सांप्रदायिक दुहाई का इस्तेमाल शुरू कर दिया है और वह भी काफी विस्तार से। इस सांप्रदायिक दुहाई पर उनकी निर्भरता का आलम यह है कि राम मंदिर प्रकरण को भी इसके लिए नाकाफी मानकर, सांप्रदायिक दुहाई के इस्तेमाल के लिए नये–नये बहाने खोजे जा रहे हैं। जम्मू–कश्मीर में हिंदू–बहुल ऊधमपुर में अपनी चुनावी सभा में जिस तरह प्रधानमंत्री ने सावन के महीने में मांस पकाने और नवरात्रि में मछली खाने का मुद्दा उछालकर और उसे मुगलों से जोड़कर, विपक्ष को सांप्रदायिक तरीके से निशाना बनाने की कोशिश की है, इसी बदहवासी को दिखाता है। और इसी बदहवासी को दिखाता है, कांग्रेस के चुनाव घोषणापत्र को उनका एक ओर मुस्लिम लीग से और दूसरी ओर कम्युनिस्टों के साथ जोड़ने की कोशिश करना, जिस कोशिश को नरेंद्र मोदी अपने स्क्रिप्टेड इंटरव्यू में भी दोहराते हैं। अब की बार चार सौ पार के दावों के संदर्भ में, इस तरह की बदहवासी किसी को हैरान तो कर सकती है, लेकिन इसमें हैरानी की बात है नहीं।

2014 और 2024 के बीच, बुनियादी अंतर यह है कि इस दौरान देश की जनता और खासतौर पर मेहनतकश जनता, मोदी के कारपोरेट–सांप्रदायिक गठजोड़ की तानाशाही के दस साल भुगत चुकी है। 2014 के चुनाव में अच्छे दिनों के नाम पर जैसे अवाम को भरमाया जा सकता था, अब और संभव नहीं है, 2047 में विकसित भारत बनाने के हवाई सपनों से हर्गिज नहीं। दूसरी ओर, इस बार पुलवामा जैसा कोई राष्ट्रवादी भावनाएं उभारने वाला मुद्दा भी नहीं है। ऐसे में मोदी राज से जनता के असंतोष और खासतौर पर बेरोजगारी से लेकर, महंगाई तक, जनता की रोजी–रोटी पर सीधे असर करने वाले मुद्दों पर इस सरकार की घोर विफलता पर तथा बढ़ते पैमाने पर तानाशाही के व्यवहार पर, अवाम की नाराजगी से बचाव के लिए, नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा–आरएसएस को, धर्म की सांप्रदायिक दुहाई में ही शरण दिखाई दे रही है। यह दूसरी बात है कि यह सांप्रदायिक दुहाई भी, कितनी काम करेगी, यह तो आने वाले पौने दो महीनों में ही पता चलेगा। बहरहाल, चुनाव प्रचार की शुरूआत से नरेंद्र मोदी का इस पर्दे की ओट में छुपने की कोशिश करना, ताकत की नहीं, कमजोरी की ही निशानी है। 2024 में एक बार फिर 2004 का चुनाव नतीजा दोहरा दिया जाए, तो हैरानी की बात नहीं होगी।

गोरखपुर में आग का कहर जारी, फसल झोपड़ी और गुमटी जलकर राख

संवाददाता के अनुसार नगर पंचायत के वार्ड नंबर चार व पांच के बीच गांव के दक्षिण तरफ रेल लाइन के किनारे किसी ने खेत में पड़े डंढल में आग लगा दी। जो देखते ही देखते तेज हवा के चलते गांव के किनारे भगहू यादव की झोपड़ी को अपने चपेट में ले लिया। इससे उसमें बंधे तीन पशु की मौत हो गई।
गोरखपुर। ग्रामीणों की लापरवाही से शुक्रवार को भी आग का कहर जारी रहा। डंठल में लगी आग से किसानों के खेत में खड़ी गेहूं और अरहर की फसल, चार झोपड़ी और दो गुमटी जलकर राख हो गई। वहीं झोपड़ी में बंधे तीन पशुओं की जलने से मौत हो गई। एक गंभीर रूप से झुलस गई।
पीपीगंज संवाददाता के अनुसार नगर पंचायत के वार्ड नंबर चार व पांच के बीच गांव के दक्षिण तरफ रेल लाइन के किनारे किसी ने खेत में पड़े डंढल में आग लगा दी। जो देखते ही देखते तेज हवा के चलते गांव के किनारे भगहू यादव की झोपड़ी को अपने चपेट में ले लिया।
इससे उसमें बंधे तीन पशु की मौत हो गई। इसके बाद आग फुलवरिया गांव पहुंची। जहां ग्रामीणों ने कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पा लिया।
पीपीगंज कस्बे में स्थित मोबिल की दुकान में आग लगने से हजारों का सामान जल गया।
नई बाजार संवाददाता के अनुसार झंगहा थाना क्षेत्र के इटौवा गांव के पूर्व डंठल में लगी आग महुअर कोल गांव तक पहुंची। जहां वजीर खान की झोपड़ी, पंपिसेट और फतई खान, इशफाक, ज्ञासूदीन की फसल जलाकर राख कर दी।
वहीं अमीरुल्ला खान का मुर्गी फार्म और भूसा भी आग में जल गया। गगहा संवाददाता के अनुसार थाना क्षेत्र के बिठुआ में आग लगने से वीरेन्द्र की झोपड़ी और गुमटी व उसमें रखे गए किराना के सामान जल गए। आग मंझरिया में लगी थी जो तेज हवा से जलते–जलते आशापार बिठुआ गांव तक पहुंच गई थी। सूचना पर पुलिस और दमकल कर्मियों ने आग पर काबू पाया। चरगांवा संवाददाता के अनुसार शाहपुर थाना क्षेत्र के जंगल सालिक राम भगतपुरवा में आग लगने से लीलावती देवी की झोपड़ी जल गई।
सहजनवां संवाददाता के अनुसार कोहार भार सिवान में डंठल में लगी आग तेज हवा से मटियारी गांव तक पहुंच गई और सुरेश गुप्ता, संजय और राजेश चौरसिया के तीन बीघा में बोयी गई सब्जी की फसल को जला दिया।

सिस्टम पर सवाल: रेलवे अस्पताल में हाउस कीपिंग असिस्टेंट के 48 पद सरेंडर

जानकारों का कहना है कि सरेंडर होने वाले पद वर्ष 2024–25 के स्वीकृत पुस्तिका से हट जाएंगे। अब इन पदों पर कोई भी भर्ती नहीं होगी। रेलवे बोर्ड ने स्टेशनों और कारखानों के बाद अस्पतालों में भी तेजी के साथ आउटसोर्सिंग की तरफ कदम बढ़ा दिया है। अब अस्पतालों में भी वार्डों और कमरों का रख–रखाव और साफ–सफाई आउटसोर्स के माध्यम से ही कराई जाएगी।

गोरखपुर। चिकित्सक, पैरामेडिकल स्टाफ, उपकरण और समुचित इलाज के अभाव से जूझ रहे ललित नारायण मिश्र केंद्रीय रेलवे अस्पताल गोरखपुर के अस्तित्व पर संकट के बादल मंडराने लगे हैं।
अस्पताल प्रबंधन ने रेलवे बोर्ड और रेलवे प्रशासन के दिशा–निर्देश पर 02 अप्रैल 2024 को हाउस कीपिंग असिस्टेंट (सफाईकर्मी) के 42 स्थायी और 06 अस्थायी सहित कुल 48 पद को सरेंडर (अभ्यर्पित) कर दिया है।बच्चा वार्ड बदल गया है।
महिला वार्ड पहले से ही बंद है। पुरुष वार्ड संचालित हैं, उसमें भी भर्ती मरीजों को जरूरी सुविधाएं और संसाधन नहीं मिल पा रहा। अब सफाईकर्मियों की भर्ती नहीं होने से साफ–सफाई पर भी ग्रहण लग जाएगाा। इसको लेकर कर्मचारी संगठनों में रोष है।
एनई रेलवे मजदूर यूनियन (नरमू) के महामंत्री केएल गुप्ता का कहना है कि सरकार रेलवे ही नहीं अस्पतालों को भी निजी हाथों में देने की साजिश रच रही है। आल इंडिया रेलवे मेंस फेडरेशन (एआइआरएफ) के माध्यम से रेल मंत्रालय तक इसका विरोध किया जाएगा।
जानकारों का कहना है कि सरेंडर होने वाले पद वर्ष 2024–25 के स्वीकृत पुस्तिका से हट जाएंगे। अब इन पदों पर कोई भी भर्ती नहीं होगी। रेलवे बोर्ड ने स्टेशनों और कारखानों के बाद अस्पतालों में भी तेजी के साथ आउटसोर्सिंग की तरफ कदम बढ़ा दिया है।
अब अस्पतालों में भी वार्डों और कमरों का रख–रखाव और साफ–सफाई आउटसोर्स के माध्यम से ही कराई जाएगी। पद सरेंडर का यह मामला नया नहीं है। इसके पहले भी रेलवे अस्पताल में विभिन्न विभागों के लगभग 100 पद सरेंडर किए जा चुके हैं।
नए पदों पर भर्ती लगभग बंद ही है। अस्पताल प्रबंधन ने तो बोर्ड के निर्देश के बाद भी सेवानिवृत्त कर्मियों का पैरा मेडिकल स्टाफ के पद पर तैनाती नहीं की है। रेलवे अस्पताल ही नहीं अन्य विभागों में भी पद सरेंडर हो रहे हैं। सहायक रसोइया, बिल पोस्टर, टाइपिस्ट, माली, दफ्तरी, बढ़ई, खलासी व पेंटर के पद भी अनुपयोगी होते जा रहे हैं।
पूर्वोत्तर रेलवे में वर्ष 2022–23 में कर्मचारियों के 1,239 पद सरेंडर कर दिए गए। एक अप्रैल, 2022 से 31 मार्च, 2023 तक लखनऊ रेल मंडल में सर्वाधिक 357 पद सरेंडर हुए हैं। वाराणसी मंडल में 285 और इज्जतनगर मंडल में 210 तथा मुख्यालय गोरखपुर के यांत्रिक कारखाने से 124 पद खत्म किए गए हैं।
सिविल में 400, मैकेनिकल में 182 और कामर्शियल में 128 पद खत्म हुए हैं। परिचालन जैसे महत्वपूर्ण विभाग में भी 115 और स्वास्थ्य सेवाओं से जुड़े मेडिकल विभाग में भी 78 पद सरेंडर किए गए हैं।
वर्ष 2020 से पहले तीन वर्ष में पूर्वोत्तर रेलवे के 9,366 नौकरियां समाप्त कर दी गईं। यह तब है जब पूर्वोत्तर रेलवे में कर्मचारियों के करीब 12 हजार 830 पद खाली हैं। रेलवे के कुल 12 विभागों में 59 हजार 463 पदों के सापेक्ष 46 हजार 633 रेल कर्मचारी ही तैनात हैं।

अधिकारियों के पद भी हो रहे सरेंडर

रेलवे में अधिकारियों के पद भी सरेंडर होने लगे हैं। रेलवे बोर्ड ने 22 सितंबर 2023 के आदेश में भारतीय रेलवे स्तर पर सीनियर स्केल के 1145 वर्क चार्ज और रेवेन्यू पोस्ट के 705 पदों को सरेंडर करने का निर्देश जारी किया है। अधिकारियों के पद सरेंडर होने के बाद अब दोबारा इन पदों पर भर्ती नहीं होगी।

प्राइवेट अस्पतालों को पैनल में शामिल करने की मांग

नरमू का प्रतिनिधि मंडल महामंत्री केएल गुप्ता के नेतृत्व में रेलवे अस्पताल के नवागत चिकित्सा निदेशक आरएन खान से मिला। इस दौरान महामंत्री ने मरीजों की समस्याओं को उठाते हुए प्राइवेट अस्पतालों को रेलवे अस्पताल के पैनल में शामिल करने की मांग की। उन्होंने बताया कि रेलवे अस्पताल से निजी फातिमा हास्पिटल, न्यू उदया हास्पिटल, राज आई हास्पिटल, अग्रवाल हड्डी अस्पताल का अनुबंध समाप्त हो गया है। इसके चलते रेलकर्मियों का समुचित इलाज नहीं हो पा रहा।

गोरखपुर में आलू ने बढ़ाए भाव

परवल करेला भिंडी और अदरक के भाव तो आसमान छू रहे हैं। सब्जी कारोबारियों के मुताबिक पछुआ हवा के कारण स्थानीय आवक प्रभावित हुई है जिससे भाव में तेजी देखने को मिल रही है। महेवा थोक मंडी में इस समय अधिकांश हरी सब्जियां बाहर से आ रही हैं। परवल की आवक जहां पश्चिम बंगाल बलिया गाजीपुर से हो रही है वहीं टमाटर पश्चिम बंगाल व फैजाबाद से आ रहा है।

गोरखपुर। आलू व टमाटर के साथ ही हरी सब्जियों पर भी महंगाई का रंग चढ़ने लगा है। पिछले दस दिनों के अंदर जहां आलू में प्रति किलो पांच रुपये की तेजी आई है, वहीं टमाटर भी 40 रुपये पहुंच गया है। फुटकर में 25 रुपये प्रति किग्रा. बिकने वाला आलू 30 रुपये किग्रा. तक पहुंच गया है। परवल, करेला, भिंडी और अदरक के भाव तो आसमान छू रहे हैं। सब्जी कारोबारियों के मुताबिक पछुआ हवा के कारण स्थानीय आवक प्रभावित हुई है, जिससे भाव में तेजी देखने को मिल रही है। महेवा थोक मंडी में इस समय अधिकांश हरी सब्जियां बाहर से आ रही हैं।
परवल की आवक जहां पश्चिम बंगाल, बलिया, गाजीपुर से हो रही है, वहीं टमाटर पश्चिम बंगाल व फैजाबाद से आ रहा है। इसी तरह भिंडी की आवक मध्य प्रदेश व बंगाल से है। गोरखपुर फल–सब्जी विक्रेता एसोसिएशन के अध्यक्ष अवध कुमार गुप्ता ने बताया कि पिछले दस दिनों के अंदर के भाव में प्रति किग्रा पांच रुपये की उछाल है। इसकी प्रमुख वजह जहां आलू की पैदावार कम होना है, वहीं आलू का शीतगृह में भंडारण है। अभी कुछ दिनों तक स्थानीय आवक न होने के कारण हरी सब्जियों के भाव में तेजी बनी रहने की उम्मीद है।

यूपी के इस शहर की सड़कें बनेंगी स्मार्ट

गोरखपुर। मुख्यमंत्री–ग्रीन रोड इन्फ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट स्कीम (अर्बन) के तहत शहर की चार और प्रमुख सड़कों को स्मार्ट रोड के तौर पर विकसित किया जाएगा। इसे लेकर प्रस्ताव तैयार किया जा रहा है। छह मई को अर्बन रोड इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट अथार्टी (यूरीडा) के कंसलटेंट गोरखपुर आएंगे, जो यहां 10 मई तक रहकर प्रस्तावित सड़कों का निरीक्षण करेंगे। इसके बाद ही संबंधित सड़कों के सीएम ग्रिड योजना के तहत निर्माण को लेकर अंतिम मुहर लगेगी।
फिलहाल निगम की ओर से जो सड़कें प्रस्तावित हैं, उनमें नार्मल मोड़ से नार्मल पुलिस चौकी, पांडेयहाता होते हुए हर्वर्ट बांध तक, शास्त्री चौक से आंबेडकर चौक होते छात्रसंघ चौराहा, अंबेडकर चौराहा से अप्सरा तिराहा व हरिओम नगर से कचहरी चौक होते हुए टाउन हाल तक तथा यातायात तिराहा से रेलवे स्टेशन चौराहा होते हुए कौआबाग तिराहा तक की सड़क शामिल है।
योजना के तहत राप्तीनगर वार्ड के शाहपुर की तीन सड़कों का चयन पहले ही किया जा चुका है। इसके निर्माण के लिए टेंडर भी निकाला जा चुका है। लोकसभा चुनाव संपन्न होते ही फर्म का चयन कर काम भी शुरू हो जाएगा।
निगम ने पिछले साल चयनित इन तीनों सड़कों के लिए पहले 62 करोड़ और फिर संशोधन के बाद 44.88 करोड़ रुपये का प्रस्ताव शासन को भेजा था, जिसे स्वीकृति मिल चुकी है।
जिन सड़कों को योजना में शामिल किया गया है, उनमें शाहपुर थाना होते हुए रिद्धि अस्पताल तक 510 मीटर लंबी व 24 मीटर चौड़ी सड़क निर्माण पर 8.01 करोड़, मेडिकल कालेज रोड दूरदर्शन आवास होते हुए ब्रदर्श बेकरी तक 471 मीटर लंबी और 18 मीटर चौड़ी सड़क पर 5.99 करोड़ और राजीव नगर कुंआ से राप्तीनगर विद्युत कार्यालय तक 1417 मीटर लंबी और 18 मीटर चौड़ी सड़क निर्माण पर 12.60 करोड़ खर्च होंगे। तीनों सड़कें आपस में जुड़ी हैं। बिजली के तार, पोल ट्रांसफार्मर शिफ्टिंग पर 12.77 करोड़ खर्च होंगे। मुख्यमंत्री नगर सृजन में विद्युत संबंधी कार्यों के लिए विद्युत निगम को 12.18 करोड़ मिलेंगे।

यह होगी स्मार्ट रोड की विशेषता

शहर की सभी स्मार्ट रोड बेंगलुरु और चेन्नई की स्मार्ट रोड की तर्ज पर बनाई जाएंगी। सड़क के दोनों तरफ साइकिल और पैदल चलने वालों के लिए छह इंच ऊंचा फुटपाथ बनाया जाएगा, जिसके नीचे ही नाली, बिजली के तारों के लिए डक्ट व पीने के पानी व गैस की पाइपलाइन बिछाई जाएगी। सड़क पर मोटरसाइकिल, कार व अन्य वाहन चलेंगे।
इसका सबसे बड़े लाभ यह होगा कि नाली, बिजली या पीने के पानी संबंधी कोई खराबी आने पर सड़क नहीं खोदनी पड़ेगी, जिससे यातायात प्रभावित नहीं होगा। डक्ट काफी गहरे बनाए जाएंगे। इसपर 40 से 50 मीटर की दूरी पर मेनहोल होंगे, जिनके जरिए डक्ट में उतरकर कर्मचारी पानी या गैस की लीकेज दुरुस्त कर सकेंगे।

हरियाली के साथ दीवारों पर म्यूरल आर्ट

शहर की पहली स्मार्ट रोड पर हरियाली बढ़ाने के साथ ही दोनों तरफ की दीवारों की म्यूरल से शोभा बढ़ाई जाएगी। फुटपाथ पर ही लोगों के बैठने के लिए बेंच भी लगाए जाएंगे।

सड़क देखने बेंगलुरु गए थे निगम के मुख्य अभियंता

अर्बन रोड इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट अथार्टी (यूरीडा)के अधिकारियों के नेतृत्व में गोरखपुर समेत विभिन्न नगर निगमों की टीम आठ अप्रैल को बेंगलुरु जाकर वहां 10 साल पुरानी स्मार्ट रोड का निरीक्षण किया था।
साथ ही इन्हें बनाने वाली कंसल्टेंट एजेंसी से मिलकर डीपीआर का भी अध्ययन किया था।
वहां से निकलकर टीम चेन्नई गई, जहां बेंगलुरु की तकनीक पर स्मार्ट सड़क का निर्माण हो रहा था। टीम में गोरखपुर नगर निगम की ओर से मुख्य अभियंता संजय चौहान शामिल थे।
नगर निगम मुख्य अभियंता संजय चौहान ने कहा कि सीएम ग्रिड योजना के तहत शहर की कुछ और प्रमुख सड़कों का निर्माण कराया जाएगा। इसके लिए सड़कों का प्रस्ताव तैयार किया जा रहा है। यूरीडा के कंसलटेंट टीम के निरीक्षण के बाद सड़कों के चयन को लेकर अंतिम निर्णय किया जाएगा। टीम का दौरा छह से 10 मई तक के लिए प्रस्तावित है।

अटकलों पर बसपा ने लगाया पूर्ण विराम

संवाददाता, संतकबीर नगर। बसपा ने शुक्रवार को अपना प्रत्याशी घोषित कर दिया। गोरखपुर जनपद के जंगल धूसड़ के रहने वाले मोहम्मद आलम को पार्टी ने टिकट दिया है। बसपा का टिकट फाइनल होते ही जनपद की राजनीति गरमा गई है। भाजपा और सपा ने पहले ही अपने उम्मीदवार घोषित कर दिए हैं।
48 वर्षीय मोहम्मद आलम पहली बार चुनाव लड़ेंगे। इससे पहले उनकी पत्नी राबिया खातून 2007 में बसपा से जिला पंचायत सदस्य रह चुकी हैं। स्नातक स्तर की शिक्षा हासिल करने वाले आलम कहते हैं कि वह 22 वर्षों से बसपा के सिपाही हैं। पार्टी नेतृत्व ने उन पर भरोसा जताकर एक सामान्य कार्यकर्ता का मान बढ़ाया है। वह पूरी दमदारी से चुनाव लड़ेंगे और बसपा को जीत दिलाएंगे।

बसपा का गढ़ रही है ये सीट

मोहम्मद आलम ने कहा कि कबीर नगरी की संतकबीर नगर लोकसभा सीट बसपा का गढ़ रही है। यहां से पार्टी के कई लोग सांसद चुने गए हैं।
बीते आठ अप्रैल को एक पुत्री के पिता बने आलम ने कहा कि बसपा का संगठन लगातार क्षेत्र में सक्रिय है। एक–एक गांव में पार्टी के कार्यकर्ता चुनाव प्रचार में जुटे हैं।

बसपा ने लगाया अटकलों पर विराम

सबसे पहले भाजपा ने इस सीट पर अपने सांसद प्रवीण निषाद को टिकट दिया है। वह पिछले कुछ दिनों से लगातार प्रचार कर रहे हैं।
पांच दिन पूर्व सपा ने भी अपने पूर्व मंत्री लक्ष्मीकांत उर्फ पप्पू निषाद को उम्मीदवार घोषित कर दिया था। बसपा के टिकट को लेकर लगातार अटकलें लग रहीं थीं। शुक्रवार को पार्टी ने मोहम्मद आलम के नाम पर मोहर लगाकर अटकलों पर विराम लगा दिया।

बसपा प्रत्याशी मोहम्मद आलम की प्रोफाइल

नाम – मोहम्मद आलम
उम्र – 48 वर्ष
शिक्षा – स्नातक
पिता का नाम – स्व. मोहम्मद अयूब
पत्नी – राबिया खातून
पुत्री– एक
निवास – ग्राम व पोस्ट –जंगल धूसड़, थाना पिपराइच, तहसील गोरखपुर सदर

बिजनौर में मतदान को लेकर भारी उत्साह

बूथों पर लगी लंबी लाइन

लोकसभा चुनाव में कांग्रेस के नए प्रयोग की होगी परीक्षा

बनाई जा रही भविष्य की रणनीति

लखनऊ। कांग्रेस पिछड़ों को टिकट देने के साथ ही भविष्य की रणनीति पर काम कर रही है। पार्टी पिछड़ों, दलितों व अल्पसंख्यकों को भागीदारी देने के मुद्दे को भुनाने की तैयारी में है। कांग्रेस ने लोकसभा चुनाव में नया प्रयोग किया है। पिछड़ों, दलितों और अल्पसंख्यकों को टिकट देने में समान हिस्सेदारी रखी है तो दूसरी तरफ सपा का वोटबैंक कांग्रेस उम्मीदवार के पक्ष में कितना जाता है, इसका भी लिटमस टेस्ट हो रहा है। इस चुनाव में कांग्रेस के इन दोनों प्रयोग की परीक्षा है। यदि पार्टी इस परीक्षा में पास हुई तो भविष्य की रणनीति इसी दिशा में रहेगी।

न्याय यात्रा के दौरान कांग्रेस के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष राहुल गांधी ने हर जिले में पिछड़े, दलितों व अल्पलंख्यकों की भागीदारी का मुद्दा उठाया था। संगठन से लेकर चुनाव तक में भागीदारी देने की वकालत की थी। लोकसभा चुनाव में यूपी में कांग्रेस को 17 सीटें मिली हैं। इसमें 15 पर उम्मीदवारों की घोषणा हो चुकी है। कांग्रेस ने तीन उम्मीदवार पिछड़े वर्ग के दिए हैं। यानी पिछड़ों की हिस्सेदारी 20 फीसदी है।

इसमें मथुरा से मुकेश कुमार धनगर जाति से हैं तो सीतापुर के राकेश राठौर अति पिछड़े वर्ग में आने वाले तेली समाज से हैं। वहीं, महराजगंज के उम्मीदवार विधायक वीरेंद्र चौधरी कुर्मी हैं। इस तरह तीन में दो अति पिछड़े हैं। अल्पसंख्यकों को भी 20 फीसदी हिस्सेदारी हैं। इसमें अमरोहा से दानिश अली व सहारनपुर में इमरान मसूद मुस्लिम तो झांसी से प्रदीप कुमार जैन हैं।

दलितों को भी 20 फीसदी हिस्सेदारी देते हुए तीन सीट दी है। सामान्य वर्ग के छह उम्मीदवारों में दो ब्राह्मण हैं। कानपुर से आलोक मिश्र और गाजियाबाद से डॉली शर्मा हैं। दो ठाकुरों में देवरिया से अखिलेश प्रताप सिंह और फतेहपुर सीकरी से रामनाथ सिकरवार हैं। दो भूमिहारों में वाराणसी से पूर्व मंत्री अजय राय और इलाहाबाद से उज्ज्वल रमण सिंह हैं।

सीतापुर के जरिये दिया समीकरण साधने का संदेश

सीतापुर लोकसभा प्रत्याशी के तौर पर पहले नकुल दुबे के नाम की घोषणा हुई थी लेकिन बाद में राकेश राठौर को उतारा गया। इसके पीछे अलग–अलग वजह बताई जा रही है। पर, शीर्ष नेतृत्व को जातीय समीकरण का ही संदेश देकर टिकट बदलने पर राजी किया गया। पार्टी के प्रदेश नेतृत्व ने समझाया कि न्याय यात्रा के दौरान राहुल गांधी ने पिछड़ों का मुद्दा बार–बार उठाया है। भविष्य की सियासी रणनीति के तहत पिछड़े वर्ग को भागीदारी का संदेश देना जरूरी है।

सोशल मीडिया से लेकर जनसभा का प्रचार

कांग्रेस की जनसभाओं और सोशल मीडिया पर पिछड़े, दलितों व अल्पसंख्यकों को टिकट में दी गई समान भागीदारी का प्रचार भी किया जा रहा है। जनसभा में यह समझाने का प्रयास किया जा रहा है कि कांग्रेस ही सभी वर्गों को समान भागीदारी दे सकती है।

अमेठी व रायबरेली पर लगी निगाहें

कांग्रेस ने अभी तक अमेठी और रायबरेली सीट पर उम्मीदवारों की घोषणा नहीं की है। ऐसे में 17 में बची इन दोनों सीटों पर सभी की निगाहें हैं। यदि गांधी का परिवार का कोई सदस्य मैदान में नहीं उतरा तो दो में एक सीट पर सामान्य वर्ग और दूसरी पर दलित उम्मीदवार उतारने की तैयारी चल रही है।

सपा के वोटबैंक पर निगाह

कांग्रेस की निगाह इन 17 सीटों पर सपा के वोटबैंक पर है। देखना यह महत्वपूर्ण होगा कि सपा का वोटबैंक कांग्रेस उम्मीदवारों को किस कदर स्थानांतरित हो पाता है। कांग्रेस आगे के चुनावों में इस अनुभव के आधार पर रणनीति तैयार करेगी।

लोकसभा चुनाव 2024

पहले चरण का मतदान

मतदाता 16.63 करोड़

पुरुष 8.4 करोड़ | महिला 8.23 करोड़ | अन्य 11,371

21 राज्य/केंद्र शासित प्रदेश | 102 सीटें | 1625 उम्मीदवार | मतदान केंद्र 1.87 लाख

सुबह सात से शाम छह बजे तक मतदान

पहला चरण — लोकसभा चुनाव 2024 — सीटें: 102

बिहार

सीट	भाजपा	राजद	बसपा
औरंगाबाद	सुशील कुमार सिंह	अभय कुमार सिन्हा	सुनेश कुमार
गया (एससी)	जीतन राम मांझी (हम)	कुमार सर्वजीत	सुषमा कुमारी
नवादा	विवेक ठाकुर	श्रवण कुमार	रंजीत कुमार
जमुई (एससी)	अरुण भारती (LJP (R))	अर्चना कुमारी	सकलदेव दास

मेघालय

सीट	एनपीपी	कांग्रेस	यूडीपी+
शिलॉन्ग	डॉ. माजेल लिंग्दोह	विंसेंट एच पाला	आरखारजहरीन (यूडीपी)
तुरा	अगाथा के संगमा	सलेंग ए. संगमा	जेनिथ संगमा (टीएमसी)

राज्य : 21 — लोकसभा चुनाव: पहला चरण — सीटें: 102

सबसे बड़े पर्व की शुरुआत

पहले चरण में जहां चुनाव, वहां 2019 में ऐसा था मतदान

69.96%

सबसे ज्यादा 87.03% अरुणाचल पूर्व

सबसे कम 49.73% नवादा (बिहार)

पहला चरण — लोकसभा चुनाव 2024 — सीटें: 102

तमिलनाडु

सीट	भाजपा+	द्रमुक+	अन्नाद्रमुक+
तिरुवल्लूर	वी.बालागणपति	शशिकांत सेंथिल (कांग्रेस)	के. नल्लाथम्बी (DMDK)
चेन्नई उत्तर	आरसी कनागराज	कलानिधि वीरस्वामी	आर. मनोहर
चेन्नई दक्षिण	टी. सुंदरराजन	टी सुमति	डॉ.जे जयवर्धन
चेन्नई मध्य	विनोज पी सेल्वम	दयानिधि मारन	बी. पार्थसारथी (DMDK)
श्रीपेरंबदूर	वेणुगोपाल (TMC(M))	टीआर बालू	जी. प्रेमकुमार
कांचीपुरम	ज्योति वी टीएमसी (PMK)	जी. सेलवम	ई. राजशेखर
अर्कोणाम	के. बालू (PMK)	एस जगथरक्षकन	एल. विजयन
वेल्लोर	एसी शनमुगम	डीएम कथिर आनंद	डॉ. एस पसुपति
कृष्णागिरि	सी नरसिम्हन	के. गोपीनाथ (कांग्रेस)	वी.जयप्रकाश
धरमपुरी	सौम्या अंबुमणि (PMK)	ए. मणि	डॉ. आर. अशोकन
तिरुवन्नामलाई	ए.अश्वाथामन	सी.एन. अन्नादुरई	एम कलियापेरुमल
अराणी	गणेश कुमार (PMK)	एम एस थरानिवेंथन	जी.वी. गजेंद्रन
विलुप्पुरम	एस. मुरली शंकर (PMK)	डी. रविकुमार	जे. भाग्यराज
कल्लाकुरिची	डी. रामासामी (PMK)	डी. मलैयारासन	आर. कुमारगुरु
सालेम	एन. अन्नादुरई (PMK)	टीएम सेल्वगणपति	पी विग्नेश
नमक्कल	के.पी.रामलिंगम	वीएस मथेश्वरन	एस तमिलमनी
इरोड	पी. विजयकुमार (TMC(M))	केई प्रकाश	अशोक कुमार
तिरुप्पुर	एपी मुरुगनंदम	के. सुब्बारायण (भाकपा)	पी. अरुणाचलम
नीलगिरि	एल मुरुगन	ए. राजा	डीएल तमिलसेल्वन
कोयंबटूर	के. अन्नामलाई	पी. राजकुमार गणपति	जी.रामचंद्रन सिंघाई

पहला चरण — लोकसभा चुनाव 2024 — सीटें: 102

उत्तर प्रदेश

सीट	भाजपा	कांग्रेस	बसपा
सहारनपुर	राघव लखनपाल	इमरान मसूद (कांग्रेस)	माजिद अली
कैराना	प्रदीप कुमार	इकरा हसन	श्रीपाल
मुजफ्फरनगर	संजीव बालियान	हरेंद्र मलिक	दारा सिंह प्रजापति
बिजनौर	चंदन चौहान (रालोद)	दीपक	विजेन्दर सिंह
नगीना	ओम कुमार	मनोज कुमार	सुरेन्द्र पाल सिंह
मुरादाबाद	सर्वेश सिंह	रूचि वीरा	मोहम्मद इरफान
रामपुर	घनश्याम लोधी	मोहिब्बुल्लाह	जीशान खाँ
पीलीभीत	जितिन प्रसाद	भगवत सरन गंगवार	अनीस अहमद खां

पहला चरण — लोकसभा चुनाव 2024 — सीटें: 102

उत्तराखंड

सीट	भाजपा	कांग्रेस	बसपा
टिहरी गढ़वाल	माला राज्यलक्ष्मी शाह	जोत सिंह गुनसोला	नेमचंद
गढ़वाल	अनिल बलूनी	गणेश गोदियाल	धीर सिंह
अल्मोड़ा	अजय टम्टा	प्रदीप टम्टा	नारायण राम
नैनीताल-उधमसिंह नगर	अजय भट्ट	प्रकाश जोशी	अख्तर अली
हरिद्वार	त्रिवेंद्र सिंह रावत	वीरेंद्र रावत	जमील अहमद

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा का अंतिम परिणाम जारी

दिल्ली। संघ लोक सेवा आयोग ने सिविल सेवा परीक्षा का फाइनल रिजल्ट जारी कर दिया है। संबंधित उम्मीदवार आधिकारिक वेबसाइट पर जाकर रिजल्ट देख सकते हैं। संघ लोक सेवा आयोग ने यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा (यूपीएससी सीएसई) 2023 के लिए अंतिम परिणाम आज, यानी 16 अप्रैल, 2024 को घोषित कर दिया है। लिस्ट में कुल 1016 उम्मीदवारों ने जगह बनाई है। यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा 2023 में शामिल हुए उम्मीदवार आयोग की आधिकारिक वेबसाइट नचेब.हवअ.पद पर जाकर रिजल्ट पीडीएफ डाउनलोड कर सकते हैं। इस साल यूपीएससी फाइनल रिजल्ट में आदित्य श्रीवास्तव ने टॉप किया है।

यूपीएससी ने अपनी आधिकारिक वेबसाइट नचेब.हवअ.पद पर एक सार्वजनिक सूचना के माध्यम से परिणामों की घोषणा की। नोटिस में लिखा है, "संघ लोक सेवा आयोग द्वारा सितंबर, 2023 में आयोजित सिविल सेवा परीक्षा, 2023 के लिखित भाग और जनवरी–अप्रैल 2024 में आयोजित व्यक्तित्व परीक्षण के लिए साक्षात्कार के परिणाम के आधार पर, नियुक्ति के लिए अनुशंसित अभ्यर्थियों की योग्यता सूची जारी की गई है।"

किस वर्ग के कितने उम्मीदवार?

यूपीएसी में सफलता पाने वाले 1016 उम्मीदवारों में 347 सामान्य वर्ग, 115 ईडब्ल्यूएस, 303 अन्य पिछड़ा वर्ग, 165 अनुसूचित जाति और 86 अनुसूचित जनजाति वर्ग से हैं।

आईएएस के लिए 80 उम्मीदवारों का चयन

इस बार आईएएस सेवा के लिए 180 उम्मीदवारों का चयन हुआ है, जिसमें 73 सामान्य वर्ग, 17 ईडब्ल्यूएस, 49 अन्य पिछड़ा वर्ग, 27 अनुसूचित जाति और 14 अनुसूचित जनजाति वर्ग से हैं।

37 उम्मीदवार बनेंगे आईएफएस अफसर

ऐसे ही आईएफएस सेवा के लिए 37 उम्मीदवारों का चयन हुआ है, जिसमें 16 सामान्य वर्ग, 4 ईडब्ल्यूएस, 10 अन्य पिछड़ा वर्ग, 5 अनुसूचित जाति और 2 अनुसूचित जनजाति वर्ग से हैं।

आईपीएस सेवा के लिए 200 उम्मीदवारों का चयन

इसके साथ आईपीएस सेवा के लिए 200 उम्मीदवारों का चयन हुआ है, जिसमें 80 सामान्य वर्ग, 20 ईडब्ल्यूएस, 55 अन्य पिछड़ा वर्ग, 32 अनुसूचित जाति और 13 अनुसूचित जनजाति वर्ग से हैं।

सेंट्रल सर्विस ग्रुप 'ा' और 'ठ' के लिए इतनों का चयन

यूपीएससी की ओर से जारी परिणामों में सेंट्रल सर्विस ग्रुप 'ा' के लिए कुल 613 और ग्रुप 'ठ' सर्विसेस के लिए 113 उम्मीदवार चयनित हुए हैं।

15 दिनों के भीतर जारी होंगे अंक

जो भी उम्मीदवार यूपीएससी की परीक्षा में शामिल हुए थे, उनके अंक परिणाम घोषित होने की तारीख से 15 दिनों के भीतर वेबसाइट पर उपलब्ध होंगे। कुल 1016 उम्मीदवारों का चयन हुआ है। 355 अनुशंसित उम्मीदवारों की उम्मीदवारी को अनंतिम रखा गया है।

यूपीएससी में लखनऊ के आदित्य श्रीवास्तव ने किया टाप

लखनऊ। संघ लोक सेवा आयोग ने सिविल सेवा परीक्षा का फाइनल रिजल्ट मंगलवार को जारी कर दिया। संबंधित उम्मीदवार आधिकारिक वेबसाइट पर रिजल्ट चेक कर सकते हैं। संघ लोक सेवा आयोग ने यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा (यूपीएससी सीएसई) 2023 के लिए अंतिम परिणाम जारी कर दिया है। 1016 आवेदकों ने सफलता पाई है। यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा 2023 में शामिल हुए उम्मीदवार आयोग की आधिकारिक वेबसाइट पर जाकर रिजल्ट पीडीएफ डाउनलोड कर सकते हैं।

इस साल यूपीएससी फाइनल रिजल्ट में आदित्य श्रीवास्तव ने टॉप किया है। दूसरे नंबर अनिमेष प्रधान रहे, जबकि तीसरे स्थान डोनुरु अनन्या रेड्डी ने पाया है। आईएएस 2023 की परीक्षा में टॉप करने वाले आदित्य श्रीवास्तव लखनऊ के रहने वाले हैं। वो लखनऊ के अलीगंज में रहते हैं। सिटी मोंटेसरी स्कूल (सीएमएस) के पूर्व छात्र हैं। इनके अलावा झांसी के अनिकेत शांडिल्य ने यूपीएससी में 12वीं रैंक पाई है। अनिकेत के पिता आलोक शांडिल्य जीआईसी में शिक्षक हैं। वहीं, सीतापुर में तैनात रहीं डिप्टी कलेक्टर फरहीन जाहिद ने यूपीएससी में सफलता पाई। उन्हें 241 रैंक मिली है।

यूपीएससी ने अपनी आधिकारिक वेबसाइट पर एक सार्वजनिक सूचना के माध्यम से परिणामों की घोषणा की। नोटिस में लिखा है, "संघ लोक सेवा आयोग द्वारा सितंबर, 2023 में आयोजित सिविल सेवा परीक्षा, 2023 के लिखित भाग और जनवरी–अप्रैल 2024 में आयोजित व्यक्तित्व परीक्षण के लिए साक्षात्कार के परिणाम के आधार पर, नियुक्ति के लिए अनुशंसित अभ्यर्थियों की योग्यता सूची जारी की गई है।

लालजी टंडन के बेटे का पत्ता साफ

भाजपा ने लखनऊ पूर्वी सीट पर इस नेता को बनाया उम्मीदवार

लखनऊ की राजनीति में लालजी टंडन और उनके परिवार की खास पहचान थी और लालजी टंडन की पहचान पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के खास लोगों में होती थी। टंडन बिहार के साथ ही मध्य प्रदेश के राज्यपाल भी रहे थे जिनका कुछ साल पहले निधन हो गया था। अतीत को देखा जाए तो लंबे समय से कायस्थ समाज के खाते में विधानसभा की एक सीट जाती थी...

संवाददाता, लखनऊ। भाजपा ने अपने पुराने कार्यकर्ता ओपी श्रीवास्तव को पूर्वी विधानसभा के उप चुनाव में उम्मीदवार बनाया है। पूर्व मंत्री और पूर्वी विधानसभा सीट से विधायक रहे आशुतोष टंडन के निधन से यह सीट रिक्त हुई थी। माना जा रहा था कि दिवंगत आशुतोष टंडन के भाई अमित टंडन को टिकट मिल सकता है और अमित ने अपनी सक्रियता भी बढ़ा दी थी। वैसे तो कई अन्य दावेदार थे, जिसमे ओपी श्रीवास्तव का नाम भी था।

पूर्व पीएम अटल वाजपेयी के थे खास

लखनऊ की राजनीति में लालजी टंडन और उनके परिवार की खास पहचान थी और लालजी टंडन की पहचान पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के खास लोगों में होती थी। टंडन बिहार के साथ ही मध्य प्रदेश के राज्यपाल भी रहे थे, जिनका कुछ साल पहले निधन हो गया था।

कायस्थ समाज को लोकसभा चुनाव में साधने के लिए भाजपा ने यह कार्ड खेला है। अतीत को देखा जाए तो लंबे समय से कायस्थ समाज के खाते में विधानसभा की एक सीट जाती थी और लंबे समय तक मध्य और बाद में पश्चिम सीट से सुरेश श्रीवास्तव ने प्रतिनिधित्व किया था। पिछले विधानसभा चुनाव में भाजपा ने पश्चिम सीट से अंजनी श्रीवास्तव को मैदान में उतारा था लेकिन वह हार गए थे।

भाजपा प्रदेश कार्यसमिति के सदस्य के साथ ही भाजपा की आजीवन निधि सहयोग विभाग के संयोजक रहे ओपी श्रीवास्तव भाजपा अवध क्षेत्र के कोषाध्यक्ष भी रहे थे।

भाजपा ही जीत रही है सीट पर

महोना और पूर्वी (पूर्व परिसीमन के हिसाब से) विधानसभा के इलाकों को शामिल कर पूर्वी विधानसभा सीट बनाई गई थी और 2012 में भाजपा ने कलराज मिश्र को मैदान में उतारा था, 68,726 मत मिले थे, जबकि सपा की जूही सिंह को 47,908 मत, कांग्रेस के रमेश श्रीवास्तव को 35,227 मत, बसपा के कृष्ण कुमार त्रिपाठी को 28040 मत मिले थे।

इसके बाद कलराज मिश्र के देवरिया से सांसद निर्वाचित होने से पूर्वी विधानसभा सीट पर 2014 के उपचुनाव में पूर्व मंत्री लालजी टंडन के पुत्र आशुतोष टंडन 'गोपाल' को भाजपा ने मैदान में उतारा था। राजनीति का फोकस पश्चिम विधानसभा सीट पर होने के बाद भी आशुतोष टंडन ने 71,640 मत पाकर सपा उम्मीदवार जूही सिंह को हराया था।

जूही को मिले थे 45 हजार से अधिक मत

जूही को 45,181 मत मिले थे, जबकि कांग्रेस के रमेश श्रीवास्तव 9,757 मत पाकर फिर से तीसरे स्थान पर रहे थे। इसके बाद भाजपा उम्मीदवार आशुतोष टंडन ने 2022 के आम विधानसभा का चुनाव जीता था। आशुतोष टंडन को 1,51,994 मत मिले, जबकि सपा उम्मीदवार अनुराग भदौरिया 84,197 मत पाए थे। पिछले साल उनका निधन होने से यह सीट खाली हो गई थी।

अखिलेश का दावा, मैनपुरी से रिकार्ड मतों से जीतेंगी डिंपल

■ [redacted]

मैनपुरी। [redacted]

मैनपुरी से डिंपल के नामांकन के वाद सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने मीडिया वार्ता में दावा किया कि पिछली वार उप चुनाव में नेताजी को याद कर लोगों ने वोट किया था व ऐतिहासिक जीत मिली थी। इस वार रिकार्ड मतों से जीत का होगी। इस अवसर पर डिंपल भी विश्वास से भरी नजर आईं। उन्होंने भरोसा जताया कि मैनपुरी की जनता का विश्वास उन्हें मिलेगा। अखिलेश ने कहा कि मैनपुरी की जनता का नेताजी मुलायम सिंह यादव से भावानात्मक रिश्ता था। मैनपुरी के घर-घर से नेताजी का सुख-दुख का रिश्ता रहा है। समाजवादी पार्टी उस रिश्ते को और आगे ले जा रही है। मैनपुरी वालों का हर एक वोट माननीय नेताजी की याद में समर्पित एक श्रद्धासुमन होगा।

सपा प्रमुख ने कहा कि मैनपुरी में दूसरे दलों के पास वताने और दिखाने के लिए कुछ नहीं है। इसलिए पोस्टरों से उनके नेता व सांसद गायव है और जो एक दिख रहे हैं उनका भी सफाया हो जायेगा। उन्होंने कहा कि मैनपुरी में जो विकास दिख रहा है वह नेताजी व समाजवादी सरकार की देन है। उन्होंने कहा कि भाजपा की नीति व इलेक्टोरल वांड से चंदा वसूली के कारण महंगाई चरम पर है। ईडी, सीवीआई व इन्कम टैक्स विभाग को पार्टी ने अपना हथियार वना लिया है। उन्होंने कहा कि भाजपा ने किसानों के साथ धोखा किया। एमएसमपी नहीं दिया। काले कानून वनाये जिसे वापस लेना पड़ा, इस सरकार के 10 साल में 1 लाख किसानों ने आत्महत्या की, आरक्षण न देना पड़े इसलिए नौकरी नहीं दे रहे व नौकरी निकाल कर पेपर आउट करा दे रहे हैं। उद्योगपतियों के 15 लाख करोड़ के कर्ज माफ कर दिये व किसानों का कर्ज माफ न कर सम्मान निधि का झुनझुना पकड़ा दिया।

उन्होंने कहा कि समाजवादियों ने डिजिटल डिवाइड दूर करने के लिए छात्रों को लैपटॉप दिये। अव गरीवों को राशन से पौष्टिक आटा के साथ मुफ्त इंटरनेट डाटा भी दिया जायेगा। उन्होंने कहा कि सपा-इंडिया गठवंधन की सरकार वनी तो 30 लाख रिक्त पदों को भरने के साथ ही किसान, श्रमिक व गरीव महिलाओं को आर्थिक सहायता दी जायेगी। पुरानी पेंशन योजना प्रभावी की जायेगी। उन्होंने भाजपा को झूठी पार्टी व उनके वादे को झूठा वताते हुए कहा कि 2014 में ये जुमला लेकर आये थे और अव गारंटी की घंटी लेकर आये हैं। देश की जनता इनके जुमले व घंटी को समझ गई है। उन्हें लोकसभा चुनाव की तारीखों का इंतजार है। जनता भाजपा को सत्ता से वाहर का रास्ता दिखाकर इनका अहंकार तोड़ेगी।

हेमंत के धनशोधन मामले में एक और गिरफ्तार

रांची। झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन व अन्य के खिलाफ दर्ज धनशोधन मामले की जांच के सिलसिले में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने एक और व्यक्ति को गिरफ्तार किया है।

आधिकारिक सूत्रों ने मंगलवार को यह जानकारी दी। ईडी ने मामले से कथित तौर पर जुड़े अंतु तिर्की नामक व्यक्ति के खिलाफ रांची में कुछ स्थानों पर छापे भी मारे। गिरफ्तार व्यक्ति की पहचान एक अन्य धनशोधन मामले में न्यायिक हिरासत के तहत जेल में वंद अफशार अली के रूप में हुई है और ईडी ने अदालत की अनुमति ह्यसिल करने के वाद नए मामले में उसे हिरासत में लिया है।

आज चलेगी अहमदाबाद-गोरखपुर समर स्पेशल ट्रेन

लखनऊ [redacted] गर्मी की छुट्टियों में मुसाफिरों को राहत पहुंचाने के लिए रेलवे ने अहमदाबाद से गोरखपुर के वीच समर स्पेशल ट्रेन चलाने का निर्णय लिया है। लखनऊ के रास्ते समर स्पेशल ट्रेन का संचालन किया जाएगा। दोनों ओर से एक-एक ट्रिप का संचालन किया जाएगा।

.रेलवे प्रवक्ता ने वताया कि वुधवार को अहमदावाद-गोरखपुर समर स्पेशल ट्रेन (04403) का संचालन किया जाएगा। समर स्पेशल ट्रेन अहमदावाद से सुवह नौ वजे चलकर दूसरे दिन लखनऊ सुवह 08.10 वजे तथा गोरखपुर 14 वजे पहुंचेगी। वापसी में गोरखपुर-अहमदावाद समर स्पेशल ट्रेन (04404) वृहस्पतिवार को चलेगी। गोरखपुर से समर स्पेशल ट्रेन 17 वजे रवाना होकर लखनऊ 22.20 वजे तथा दूसरे दिन 20.40 वजे अहमदावाद पहुंचेगी। स्पेशल ट्रेन का ठहराव आणंद, छायापुरी, रतलाम, कोटा, सवाई माधोपुर, गंगापुर सिटी, वयाना, भरतपुर, अछनेरा, आगरा किला, टूण्डला, इटावा, कानपुर, वारावंकी, गोण्डा, वस्ती, खलीलावाद स्टेशनों पर दिया गया है। 22 डिव्वों की इस ट्रेन में 20 स्लीपर और दो एसएलआरडी कोचों को लगाया गया है।

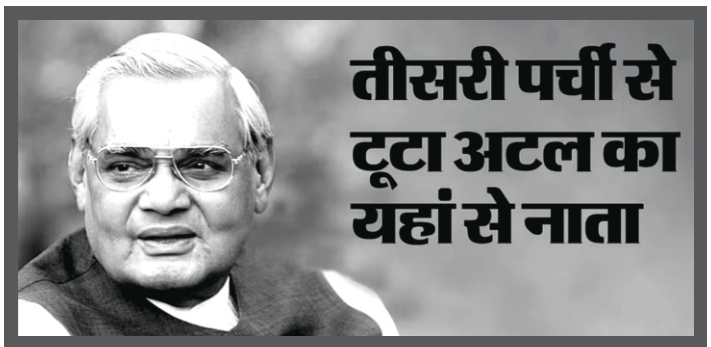

कागज के एक टुकड़े से टूटा था अटल का बलरामपुर से नाता

पर्ची में नाम निकला तो ग्वालियर से चुनाव लड़े वाजपेयी

लखनऊ। कागज के एक टुकड़े से अटल बिहारी वाजपेयी का बलरामपुर से नाता टूट गया था। पर्ची में नाम निकला तो अटल बिहारी ग्वालियर से चुनाव लड़े थे। मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्यु तक कागज के टुकड़ों की अहम भूमिका होती है। इन्हीं कागज के टुकड़ों से रिश्ते जुड़ते हैं और कई बार टूट जाते हैं। राजनीति के क्षेत्र में भी कागज के टुकड़ों पर भविष्य तय होते हैं और इसी से कर्मस्थली से नाता टूट भी जाता हैं, लेकिन यह कम लोगों को पता होगा कि इसी कागज की पर्ची के खेल से अटल बिहारी वाजपेयी का बलरामपुर से नाता टूट गया था। साल 1957 में पहली बार अटल बिहारी वाजपेयी अविभाजित गोंडा जिले के बलरामपुर संसदीय क्षेत्र से चुनाव लड़े। तब उनकी पार्टी अखिल भारतीय जनसंघ का चुनाव निशान दीपक था और पार्टी ने कागज पर फरमान जारी कर उन्हें सिंबल प्रदान किया था।

वह जब चुनाव जीते तो निर्वाचन आयोग की ओर से कागज पर ही जीत का प्रमाण पत्र दिया गया। इन्हीं कागजों से उनका बलरामपुर से रिश्ता जुड़ गया था। साल 1962 में हारने के बाद उन्होंने 1967 में जीत हासिल की तब भी कागज के पन्ने पर ही जीत का प्रमाण पत्र मिला था, लेकिन 1971 में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ और जनसंघ ने उन्हें ग्वालियर से चुनाव लड़ाने का फैसला किया।

अटल बिहारी वाजपेयी को ग्वालियर से लड़ाने की बात बलरामपुर तक पहुंची तो आनन–फानन में कार्यकर्ताओं ने बैठक कर तय किया कि संघ के निर्णय का विरोध होगा और अटल जी को बलरामपुर से ही लड़ाया जाएगा।

बलरामपुर के कार्यकर्ताओं में ग्वालियर से अटल के लड़ने को लेकर काफी नाराजगी थी। तय हुआ कि दिल्ली मे हाईकमान से मिलकर इसका इजहार कर निर्णय बदलवाया जाय। इसके लिए प्रताप नरायन तिवारी की कार से मदन मोहन शर्मा व नरेंद्र बहादुर पाठक लखनऊ जाकर जनसंघ के दिग्गज नेता सुंदर सिंह भंडारी से मिले और दूसरे प्रत्याशी के हार जाने का वास्ता देते हुए विरोध दर्ज कराया। भंडारी ने कहा कि एक सीट हारने से कोई फर्क नहीं पड़ने वाला।

तीसरी पर्ची से टूट गया बलरामपुर से नाता

भंडारी के जवाब से क्षुब्ध बलरामपुर के जनसंघ नेताओं ने दिल्ली जाकर वाजपेयी से उनके बंगले पर मिले और बलरामपुर से ही चुनाव लड़ने की जिद करने लगे। शाम को पार्टी के मंत्री कृष्णलाल शर्मा भी आ गए तो मदन मोहन शर्मा ने फिर अपनी बात रखी। अटल बिहारी वाजपेयी पशोपेश में थे तभी कृष्णलाल शर्मा ने कहा कि पर्ची डाल ली जाय और जहां का नाम निकले अटल जी वहीं से चुनाव लड़ें।

कागज के एक टुकड़े पर बलरामपुर तो दूसरे पर ग्वालियर लिखकर उसे मोड़ कर रखा गया। रसोइया बहादुर को एक पर्ची उठाने के लिए कहा गया तो उसने पर्ची उठाई, जिसमें ग्वालियर लिखा था। बलरामपुर के लोगों के उदास चेहरे को देखते हुए कृष्णलाल शर्मा ने दूसरी पर्चियां बनाईं और मदन मोहन से उठवाया तो उसमें बलरामपुर निकला। लेकिन अटल बिहारी ने कहा कि यह खेल तो बराबर हो गया। अब तीसरी बार जो नाम निकलेगा वह फाइनल होगा। इस बार पर्ची कृष्णलाल शर्मा ने खुद उठाई तो उसमें ग्वालियर ही लिखा था। कागज के इसी खेल से अटल बिहारी वाजपेयी का बलरामपुर से नाता टूट गया और पार्टी ने ग्वालियर से उनका टिकट फाइनल कर दिया। चुनाव हुए तो बलरामपुर से चुनाव लड़े जनसंघ के प्रत्याशी प्रताप नरायन तिवारी को हार का सामना करना पड़ा।

सेहरा सजने से पहले ही उठ गई अर्थी

दो दिन बाद जानी थी बरात, इस तरह आई मौत... चीत्कार उठे घरवाले

मैनपुरी। सेहरा सजने से पहले ही होने वाले दूल्हे की अर्थी उठ गई। दो दिन बाद बरात जानी थी। इससे पहले ही मौत आ गई। खबर सुनी तो घरवाले चीत्कार उठे। उत्तर प्रदेश के मैनपुरी में सेहरा सजने से पहले हादसे ने होने वाले दूल्हे की जान ले ली। खबर से घरवाले बेहाल हो उठे। घर में चीत्कार मच गई। शादी में शामिल होने आए रिश्तेदार ढांढस तो बंधा रहे थे लेकिन खबर ऐसी थी कि उन्हें खुद को संभालना भी मुश्किल हो रहा था। दो दिन बाद बरात जानी थी। मामला भोगांव थाना क्षेत्र के नगला विचित्र गांव की है। गांव निवासी सुरेशचंद्र ने बेटे गोविंद सिंह (22) की शादी जनपद फर्रुखाबाद के गांव बरई में तय की थी। घर में शादी की तैयारियों का माहौल था। बुधवार 17 अप्रैल को मंडप का कार्यक्रम था। वहीं 18 अप्रैल को बरात जानी थी।

ट्रैक्टर ने बाइक में मार दी टक्कर

इससे पहले सोमवार की शाम गोविंद के पास होने वाले साले का फोन आया। उसने विवाह संबंधी किसी काम के लिए संकिसा बुलाया। गोविंद बाइक लेकर संकिसा चला गया। देर शाम घर लौटते समय थाना क्षेत्र के ही जसराजपुर के पास ट्रैक्टर ने टक्कर मार दी। हादसे में उसकी घटनास्थल पर ही मौत हो गई।

घर में मची चीख पुकार

राहगीरों की सूचना पर पहुंची पुलिस ने मृतक की जेब से मिले कागजात के आधार पर पहचान की। परिजन को फोन कर हादसे में गोविंद की मौत होने की जानकारी दी। मौत की खबर सुनते ही शादी वाले घर में चीख पुकार मच गई। मंगलवार को पुलिस ने पोस्टमार्टम कराया। शव को अंतिम संस्कार के लिए परिजन के सुपुर्द कर दिया।

पल भर के लिए छा गया सन्नाटा... फिर मची चीत्कार

नगला विचित्र गांव निवासी गोविंद की शादी को लेकर घर का माहौल खुशनुमा था। घर में मेहमान आए हुए हैं। महिलाएं मंगल गीत गा रहीं थीं। सभी घरवाले शादी की तैयारियों में व्यस्त थे। इस बीच पुलिस के एक फोन कॉल से घर में सन्नाटा पसर गया। फोन पर गोविंद की मौत होने की खबर मिलते ही अगले ही पल चीत्कार मच गई। शादी की खुशियां पल भर में काफूर हो गईं। रोते बिलखते परिजन मोर्चरी पहुंचे।

टिकट देने में सपा ने साधे जातीय समीकरण

सिर्फ 7 मुस्लिम प्रत्याशी, इन चार सीटों पर यादव जाति के उम्मीदवार

लखनऊ। समाजवादी पार्टी ने टिकट देने में 'माय' से ज्यादा कुर्मी और अन्य पिछड़ी जातियों को तरजीह दी है। सपा ने जातीय समीकरण साधने के बाद टिकट वितरित किए हैं। चार मुस्लिम और 9 सामान्य वर्ग के प्रत्याशियों को टिकट मिला है। सपा ने टिकट देने में जातीय समीकरणों को साधने का पूरा प्रयास किया है। साथ ही इस बात का भी ख्याल रखा है कि उसके किसी कदम से धार्मिक ध्रुवीकरण का संदेश न जाए। यही वजह है कि मुस्लिम और यादवों से ज्यादा कुर्मी, मौर्य–शाक्य–सैनी–कुशवाहा प्रत्याशियों को टिकट दिए हैं।

सपा के अब तक घोषित किए गए 57 प्रत्याशियों में से चार मुस्लिम, नौ सामान्य वर्ग के, 15 एससी और 29 ओबीसी हैं। गठबंधन के तहत सपा को यूपी में 62 सीटों पर अपने प्रत्याशी उतारने हैं, जबकि 17 सीटें कांग्रेस और एक तृणमूल कांग्रेस के खाते में है। सपा ने टिकट देने में अपनी पीडीए (पिछड़े, दलित और अल्पसंख्यक) रणनीति का ध्यान तो रखा है, पर मंशा यह भी रही है कि आधार वोट में प्लस करने वाले प्रत्याशी उतारे जाएं। इन्हीं समीकरणों के तहत नौ सीटों–बस्ती, प्रतापगढ़, गोंडा, अंबेडकरनगर, बांदा, लखीमपुर खीरी, पीलीभीत, कुशीनगर और श्रावस्ती में कुर्मी–पटेल–सैंथवार प्रत्याशी दिए हैं।

सिर्फ सात फीसदी मुस्लिम प्रत्याशी

मुस्लिम और यादव (माय) सपा के आधार वोट बैंक माने जाते हैं, लेकिन सिर्फ चार सीटों–कैराना, गाजीपुर, संभल और रामपुर में ही उसने मुस्लिम प्रत्याशी उतारे हैं। प्रदेश की आबादी में मुस्लिम करीब 20 फीसदी हैं, लेकिन सपा के अभी तक घोषित प्रत्याशियों में इनकी हिस्सेदारी सात फीसदी ही है।

इसी तरह से फिरोजाबाद, बदायूं, मैनपुरी और आजमगढ़ के ही प्रत्याशी यादव जाति से हैं। ये सभी सपा प्रमुख अखिलेश यादव के परिवार के ही सदस्य हैं। अभी तक घोषित प्रत्याशियों में छह लोकसभा क्षेत्रों– एटा, आंवला, फर्रुखाबाद, बिजनौर, जौनपुर और फूलपुर से मौर्य–शाक्य–सैनी–कुशवाहा प्रत्याशी दिए हैं।

गौतमबुद्धनगर से गुर्जर, अकबरपुर से पाल, सुल्तानपुर, मिर्जापुर, संतकबीरनगर और गोरखपुर से निषाद उम्मीदवार उतारे हैं। दो सीटों–मुजफ्फरनगर और अलीगढ़ से जाट प्रत्याशी दिए हैं। फैजाबाद और मेरठ जैसी सामान्य सीटों पर अनुसूचित जाति के अवधेश प्रसाद और सुनीता वर्मा को उतारकर दलितों को तरजीह देने का संदेश भी दिया है। सामान्य जाति के नौ प्रत्याशियों में से बागपत और डुमरियागंज में ब्राह्मण प्रत्याशी हैं, जबकि चंदौली और धौरहरा में ठाकुर जाति के हैं। लखनऊ, उन्नाव, बरेली, मुरादाबाद और घोसी से भी सपा के प्रत्याशी सामान्य वर्ग से हैं।

बरेली के शोहम टिबडेवाल ने हासिल किया 77वां स्थान

बरेली। संघ लोक सेवा आयोग ने सिविल सेवा परीक्षा का फाइनल रिजल्ट जारी कर दिया है। संबंधित उम्मीदवार आधिकारिक वेबसाइट पर जाकर रिजल्ट देख सकते हैं। बरेली के शोहम टिबडेवाल ने शहर को नाम रोशन किया है। संघ लोक सेवा आयोग ने यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा (यूपीएससी सीएसई) 2023 के लिए अंतिम परिणाम मंगलवार को घोषित कर दिया। बरेली के शोहम टिबडेवाल ने दूसरे प्रयास में सिविल परीक्षा उत्तीर्ण कर शहर का नाम रोशन किया है। उन्होंने 77वां स्थान हासिल किया है। परीक्षा परिणाम आते ही उनके परिवार में खुशी की लहर दौड़ गई। शोहम फिलहाल दिल्ली में हैं। कई लोग उनके घर पर बधाई देने पहुंचे। सोशल मीडिया पर भी लोग उन्हें बधाई दे रहे हैं।

इतने उम्मीदवारों का हुआ चयन

यूपीएसी में सफलता पाने वाले 1016 उम्मीदवारों में 347 सामान्य वर्ग, 115 ईडब्ल्यूएस, 303 अन्य पिछड़ा वर्ग, 165 अनुसूचित जाति और 86 अनुसूचित जनजाति वर्ग से हैं। इस बार आईएएस सेवा के लिए 180 उम्मीदवारों का चयन हुआ है। आईएफएस सेवा के लिए 37 और आईपीएस के लिए 200 उम्मीदवार चयनित हुए हैं।

ऐसे डाउनलोड करें रिजल्ट

संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी) की आधिकारिक वेबसाइट नचेब.हवअ.पद और नचेबवदसपदम.दपब.पद पर जाएं।

मुखपृष्ठ पर, "सिविल सेवा परीक्षा, 2023 का अंतिम परिणाम" पर क्लिक करें।

अगले चरण में रिजल्ट लिंक पर क्लिक करें।

यूपीएससी परिणाम पीडीएफ दस्तावेज स्क्रीन पर दिखाई देगा।

अपना नाम, रोल नंबर, एआईआर जांचें और उसे डाउनलोड करें।

आप अपना नाम ढूंढने के लिए शॉर्टकट ब्जतस+ए' का भी उपयोग कर सकते हैं।

भविष्य के संदर्भ के लिए यूपीएससी सीएसई फाइनल रिजल्ट पीडीएफ डाउनलोड करें।

मैक्स बनाएगा 500 बेड का अस्पताल

लखनऊ मैक्स हेल्थकेयर इंस्टीट्यूट लिमिटेड के चेयरमैन और मैनेजिंग डायरेक्टर अभय सोई ने कहा कि लखनऊ में विश्वस्तरीय स्वास्थ्य सेवाओं के विकास के लिए लगभग 2500 करोड़ निवेश करने की योजना है, इसमें शहीद पथ के पास 5.6 एकड़ ज़मीन पर 500 बिस्तरों वाला एक नया हॉस्पिटल बनाना और लखनऊ के मैक्स सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल की क्षमता बढ़ाना शामिल है। इसके अलावा, यह निवेश अत्याधुनिक चिकित्सा तकनीक लाने में भी मदद करेगा, जिसमें रोबोटिक्स, कैंसर में रेडिएशन थेरेपी, प्रत्यारोपण (लिवर, किडनी, वोन मैरो, हृदय और फेफड़े के प्रत्यारोपण) और नर्सिंग शिक्षा शामिल है।

मंगलवार को गोमतीनगर स्थित हास्पिटल में आयोजित प्रेस वार्ता में श्री सोई ने सहारा हॉस्पिटल का नाम बदलकर मैक्स सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल किए जाने की भी घोषणा की।

- प्रेसवार्ता में श्री सोई ने सहारा हॉस्पिटल का नाम बदलकर मैक्स सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल किए जाने की घोषणा की
- विश्वस्तरीय स्वास्थ्य सेवाओं के लिए 2500 करोड़ निवेश करने की अपनी योजना : अभय
- राज्य में 10,000 से अधिक लोगों को रोजगार के अवसर प्रदान करेंगे

इस हॉस्पिटल को वेहतर वनाने के लिए 150-200 करोड़ रु पये खर्च करने की योजना वना रहा है, इसमें नए उपकरण, 265 नए वेड, और वुनियादी सुविधाओं में वदलाव शामिल है। हॉस्पिटल में कैंसर के इलाज के लिए एक नया केंद्र (मैक्स इंस्टीट्यूट ऑफ कैंसर केयर) भी खोला जाएगा। इसके साथ ही, अंग प्रत्यारोपण (ऑर्गन ट्रांसप्लांट) की सुविधा मज़वूत की जाएगी और वेहतरीन रोवोटिक सर्जरी सिस्टम भी शुरू किए जाएंगे। अत्याधुनिक मैक्स इंस्टीट्यूट ऑफ कैंसर केयर की शुरुआत, अंग प्रत्यारोपण कार्यक्रम को मजवूत करने और विश्व स्तरीय रोवोटिक सर्जिकल सिस्टम की शुरूआत के साथ हॉस्पिटल में महत्वपूर्ण वृद्धि होगी। उन्होंने कहा कि हमें यह उत्तर प्रदेश के विकास में भाग लेने का अवसर देता है जो कि 2027 तक 1 ट्रिलियन अमरीकी डालर की अर्थव्यवस्था वनने की ओर वढ़ रहा है। अपने निवेश के माध्यम से, हम राज्य में 10,000 से अधिक लोगों के लिए रोजगार के अवसर प्रदान करेंगे।

अल्बम 'वो था मेरे शहर में'

23 अप्रैल को होगा रिलीज

मुंबई (वार्ता)। विग वॉस फेम आयशा खान का वीडियो अल्वम 'वो था मेरे शहर में' 23 अप्रैल को रिलीज होगा। पाकिस्तानी अभिनेत्री ने आयशा खान ने विग वॉस में आकर सनसनी मचा दी थी और एक समय पर उनका नाम मुनव्वर फारुखी के साथ भी जोड़ा गया था। लाहौर पाकिस्तान में जन्मी और कनाडा सहित अबुधावी में पली वढ़ी आयशा खान मॉडलिंग की दुनिया में एक जाना पहचाना चेहरा है। उन्होंने अभी तक कई म्यूजिक एलवम में अपनी अदाकारी से हिट/सुपरहिट गानों पर परफॉर्म किया है, जिनमें उनकी हालिया रिलीज खाली वोतल भी पॉप्युलर होकर वायरल हो चुकी है। आयशा खान की परफॉर्मेंस से सजी 'खाली वोतल' को दो ही दिन में लगभग 22 लाख से भी अधिक व्यूज मिल चुके हैं। आयाशा खान ने जिन म्यूजिक वीडियोज में काम किया है उनमें अव तक सलमान अली के साथ मोहव्वत के काविल,करण रंधावा के साथ गिटार, राजवीर जवन्दा के साथ रिवॉर्न हीर जैसे सुपरहिट गाने शामिल हैं।

अपूर्वा अरोड़ा

ने 'फैमिली आज कल' के लिए 'नो मेकअप' लुक अपनाया

'मैंने शादी के लिए धर्म....

आखिरकार अरमान मलिक ने खोल ही दिया दो बीवियों का राज! बताया किस धर्म से है ताल्लुक

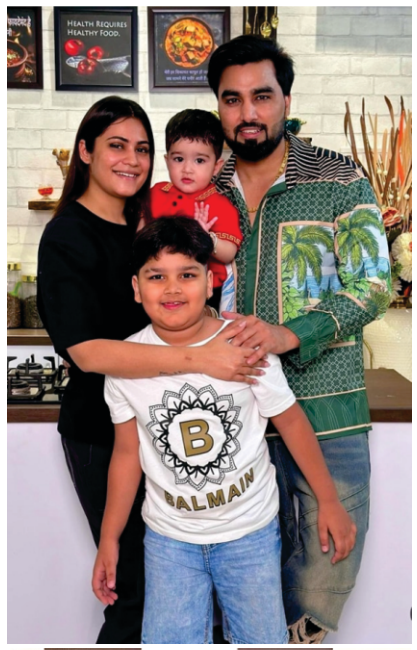

मुम्बई। यूट्यूबर अरमान मलिक काफी सुर्खियों में रहते हैं। हर दिन किसी ना किसी वजह से वे चर्चा में आ ही जाते हैं। कई बार अरमान पर सवाल भी उठते रहे हैं और ये सवाल या तो उनकी दो बीवियों पर उठते हैं या फिर उनके धर्म को लेकर। अरमान मलिक को लेकर फैंस कई बार दावा कर चुके हैं कि उन्होंने फेम के लिए दो शादियां की हैं। मगर हाल ही में अरमान मलिक ने इन सब दावों पर चुप्पी तोड़ते हुए कुछ ऐसा कह दिया, जिसे सुनने के बाद हर कोई हैरान रह गया। अरमान ने अपने धर्म और दोनों पत्नियों समेत अपने फेम को लेकर भी एक इंटरव्यू में चुप्पी तोड़ी है। चलिये जानते हैं अरमान मलिक ने क्या कुछ कहा... लोकसभा चुनाव 2024 संसदीय क्षेत्र द्य प्रत्याशी द्य चुनाव तिथियां क्या वाकई अरमान ने बदल लिया धर्म? सबसे पहले तो ये जानते हैं कि अरमान मलिक हमेशा से अरमान मलिक नहीं थे। उनका नाम संदीप था। ऐसे में फैंस का ये आरोप लगता रहा है कि अरमान ने फैन फॉलोइंग के लिए अपना धर्म बदलकर नाम अरमान मलिक रख लिया। वे जानझकर मुस्लिम बन गए ताकि उनकी पॉपुलैरिटी बढ़े। मगर इन सब खबरों को अरमान ने सिरे से नकारते हुए कहा कि वे जन्म से हिंदू हैं और हिंदू ही रहेंगे। प्तंद जजंबा वद प्तंमस नचकंजमः ईरान–इजरायल से बढ़ेगी प्दकपं में महंगाई ? द्य च्ड डवकप द्य वनइंडिया हिंदी आखिर क्यों संदीप से अरमान बने? न्यूज 18 संग बातचीत में अरमान ने कहा कि आज से 13 साल पहले मैं दिल्ली आया था। दिल्ली की चकाचौंध देखी तो लगा कि संदीप नाम तो काफी हल्का है। इसके बाद मैंने अपना नाम अरमान रख लिया। मैंने सोचा कि इसे सुनने में भी मजा आएगा और बोलने में भी। मैंने शादी के लिए धर्म... जो कोई भी हिंदू और मुसलमान वाली बातें करता है ये बिल्कुल गलत है। मैं हिंदू हूं और पूरी जिंदगी हिंदू ही रहूंगा। अरमान ने आगे कहा कि लोगों की सोच बहुत छोटी है। मैंने शादी के लिए कोई धर्म नहीं बदला। जो लोग मेरी शादी को झूठा बताते हैं और धर्म बदलने की बातें करते हैं वे लोग अपनी जिंदगी से खुद परेशान हैं। अरमान मलिक की हैं दो पत्नियां बताते चलें कि अरमान मलिक ने पहली शादी पायल मलिक से की है और फिर इसके बाद वे कृतिका को अपनी जिंदगी में लेकर आए। कृतिका और पायल संग अकसर वे वीडियोज शेयर करते रहते हैं। पायल तीन बच्चों की मां हैं तो वहीं कृतिका का एक बेटा है।

'टाइम' मैग्जीन में

आलिया भट्ट

मुंबई (वार्ता)। बॉलीवुड की जानीमानी अभिनेत्री आलिया भट्ट 'टाइम' मैग्जीन की 100 सबसे प्रभावशाली हस्तियों में शामिल हो गई हैं। टाइम मैग्जीन ने अपनी 100 सबसे प्रभावशाली शख्सियतों की लिस्ट जारी की है, जिसमें आलिया भट्ट का भी नाम शामिल है। आलिया भट्ट ने इस बात की जानकारी अपने सोशल मीडिया पर एक पोस्ट शेयर करके दी है। आलिया ने अपने इंस्टाग्राम पर लिखा, 'टाइम100' का हिस्सा बनकर सम्मानित महसूस कर रही हूं। आलिया भट्ट को लेखक-निर्देशक और फिल्म निर्माता टॉम हार्पर ने'अछ्वुत टैलेंट' में से एक बताया। उनकी प्रोफाइल में लिखा गया है कि आलिया दुनिया की टॉप एक्ट्रेसेस में से एक हैं। वह एक दशक से हिंदी फिल्म इंडस्ट्री में सराहनीय काम कर रही हैं। इसी के साथ उनकी नेकदिली और ईमानदारी की भी तारीफ की गई है। आलिया ने टॉम हार्पर के साथ अपनी पहली हॉलीवुड फिल्म'हार्ट ऑफ स्टोन' में काम किया है।

जोस बटलर की पारी नरेन पर भारी राजस्थान रॉयल्स से केकेआर हारी

कोलकाता (भाषा)। जोस वटलर के नावाद शतक की वदौलत राजस्थान रॉयल्स ने मंगलवार को इंडियन प्रीमियर लीग मैच में जोरदार वापसी करते हुए सुनील नरेन के पहले टी-20 शतक पर पारी फेर कोलकाता नाइट राइडर्स को दो विकेट से हराकर अंक तालिका के शीर्ष पर अपनी स्थिति मजवूत की। नाइट राइडर्स के 224 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए रॉयल्स की टीम 13वें ओवर में छह विकेट पर 121 रन वनाकर संकट में थी लेकिन वटलर (60 गेंद में नावाद 107 रन, नौ चौके, छह छक्के) के नावाद शतक से अंतिम गेंद पर आठ विकेट पर 224 रन वनाकर जीत दर्ज करने में सफल रही।

रियान पराग (34) और रोवमैन पावेल (26) ने भी उपयोगी पारियां खेली। नाइट राइडर्स की ओर से नरेन, वरुण चक्रवर्ती और हर्षित राणा ने दो-दो विकेट चटकाए लेकिन अपनी टीम को जीत नहीं दिला सके। नरेन ने इससे पहले तावड़तोड़ वल्लेवाजी करते हुए 56 गेंद में छह छक्कों और 13 चौकों से 109 रन की पारी खेली जिससे नाइट राइडर्स ने छह विकेट पर 223 रन वनाए। उन्होंने अंगकृष रघुवंशी (30) के साथ दूसरे विकेट के लिए 85 रन की साझेदारी की। इन दोनों के वाद 21 अतिरिक्त रन टीम की ओर तीसरा सर्वोच्च स्कोर रहा। रिंकू सिंह (नौ गेंद में नावाद 20, दो छक्के, एक चौका) ने अंत में तेजतर्रार पारी खेली।

इस जीत से रॉयल्स की टीम सात मैच में छह जीत से 12 अंक के साथ शीर्ष पर वरकरार है। नाइट राइडर्स छह मैच में चार जीत से आठ अंक के साथ दूसरे स्थान पर है। यह आईपीएल में लक्ष्य का पीछा करते हुए सवसे वड़ी जीत है। रॉयल्स ने इससे पहले 2020 में पंजाव किंग्स के खिलाफ भी 224 रन का लक्ष्य हासिल किया था। लक्ष्य का पीछा करते हुए रॉयल्स ने तेज शुरुआत की लेकिन विकेट भी गंवाए। सलामी वल्लेवाज यशस्वी जायसवाल नौ गेंद में 19 रन वनाने के वाद दूसरे ओवर में वैभव आरोड़ा की गेंद पर स्लिप में वेंकटेश अय्यर को कैच दे वैठे। कप्तान संजू सैमसन ने भी आठ गेंद में 12 रन वनाने के वाद पांचवें ओवर में हर्षित राणा की गेंद पर मिड ऑन पर नरने को कैच थमाया।

सलामी वल्लेवाज जोस वटलर और रियान पराग (34) ने इसके वाद आरोड़ा पर छक्के जड़े जिससे रॉयल्स ने पावर प्ले में दो विकेट पर 76 रन वनाए। पराग ने हर्षित की लगातार गेंदों पर छक्का और चौका मारा लेकिन इसी ओवर में गेंद को हवा में लहराकर डीप मिडविकेट पर आंद्रे रसेल के हाथों लपके गए।

उन्होंने 14 गेंद का सामना करते हुए चार चौके और एक छक्का मारा। नौवें ओवर में रॉयल्स का शतक पूरा हुआ लेकिन नरेन ने इसी ओवर में ध्रुव जुरेल (02) को पगवाधा करके टीम को चौथा झटका दिया। वटलर और रविचंद्रन अश्विन ने इसके वाद पारी को आगे वढ़ाया लेकिन रन गति वढ़ाने में नाकाम रहे। रन गति वढ़ाने के दवाव के वीच अश्विन (08) वड़ा शॉट खेलने की कोशिश में वरुण चक्रवर्ती की गेंद पर रघुवंशी को कैच दे वैठे।

चक्रवर्ती की अगली गेंद पर शिमरोन हेटमायर (00) भी कवर में श्रेयस अय्यर को कैच दे वैठे जिससे 13वें ओवर में रॉयल्स का स्कोर छह विकेट पर 121 रन हो गया। वटलर ने चक्रवर्ती पर लगातार दो चौकों के साथ 36 गेंद में अर्धशतक पूरा किया। रॉयल्स को अंतिम पांच ओवर में 79 रन की दरकार थी। वटलर ने रसेल पर दो छक्के जड़े जवकि रोवमैन पावेल (26) ने नरेन की लगातार तीन गेंद पर दो छक्के और एक चौका मारकर गेंद और रन के वीच के अंतर को कम किया। पावेल हालांकि इसी ओवर में सीधी गेंद को चूककर पगवाधा हो गए। वटलर ने अगले ओवर में स्टार्क पर छक्का और चौका मारा लेकिन ट्रेंट वोल्ट (00) रन आउट हो गए।

राजस्थान रॉयल्स को अंतिम दो ओवर में 28 रन की जरूरत थी। वटलर ने हर्षित पर छक्के के साथ टीम का स्कोर 200 रन के पार पहुंचाया। उन्होंने इसी ओवर में लगातार गेंदों पर चौका और छक्का जड़कर 19 रन वटोर लिये। राजस्थान रॉयल्स को अंतिम ओवर में नौ रन चाहिए थे। वटलर ने चक्रवर्ती की पहली गेंद पर छक्के के साथ 55 गेंद में शतक पूरा किया लेकिन अगली तीन गेंद खाली चली गई। वटलर ने पांचवीं गेंद पर दो रन के साथ स्कोर वरावर किया और फिर अंतिम गेंद पर एक रन लेकर टीम को लक्ष्य के पार पहुंचा दिया।

कोलकाता : नाइट राइडर्स के खिलाफ जोरदार शतकीय पारी के दौरान शॉट खेलते राजस्थान रॉयल्स के ओपनर जोस बटलर। *फोटो : देवज्योति चक्रवर्ती/एसएनवी*

स्कोर बोर्ड

कोलकाता नाइट राइडर्स -	
फिल सॉल्ट का. एंड बो. आवेश	10
सुनील नरेन बो. बोल्ट	109
अंगकृप रघुवंशी का. अश्विन बो. सेन	30
श्रेयप अय्यर पगबाधा बो. चहल	11
आंद्रे रसेल का. जुरेल बो. आवेश	13
रिंकू सिंह (नाबाद)	20
वेंकटेश अय्यर का. जुरेल बो. सेन	08
रमनदीप सिंह (नाबाद)	01
अतिरिक्त -	21
कुल - (20 ओवर में छह विकेट पर)	223
विकेटपतन - 1/21, 2/106, 3/133, 4/184, 5/195, 6/215	
गेंदबाजी - ट्रेंट बोल्ट 4-0-31-1, आवेश 4-0-35-2, कुलदीप सेन 4-0-46-2, युजवेंद्र चहल 4-0-54-1, रविचंद्रन अश्विन 4-0-49-0	
राजस्थान रॉयल्स -	
यशस्वी जायसवाल का. वेंकटेश बो. अरोड़ा	19
जोस बटलर (नाबाद)	107
संजू सैमसन का. नरेन बो. हर्षित	12
रियान पराग का. रसेल बो. हर्षित	34
ध्रुव जुरेल पगबाधा बो. नरेन	02
रविचंद्रन अश्विन का. रघुवंशी बो. चक्रवर्ती	08
शिमरोन हेटमायर का. श्रेयस बो. चक्रवर्ती	00
रोवमैन पावेल पगबाधा बो. नरेन	26
ट्रेंट बोल्ट रन आउट	00
आवेश खान (नाबाद)	00
अतिरिक्त -	16
कुल - (20 ओवर में आठ विकेट पर)	224
विकेटपतन -1/22, 2/47, 3/97, 4/100, 5/121, 6/121, 7/178, 8/186	
गेंदबाजी - स्टार्क 4-0-50-0, अरोड़ा 3-0-45-1, हर्षित 4-0-45-2, नरेन 4-0-30-2, चक्रवर्ती 4-0-36-2, रसेल 1-0-17-0	

केकेआर के तीसरे शतकवीर बने सुनील नरेन

कोलकाता। नाइट राइडर्स (केकेआर) के लिए ओपनिंग बल्लेबाज के तौर पर उतरने वाले सुनील नरेन ने ईडन गार्डेंस पर राजस्थान रॉयल्स के खिलाफ अपने करियर का पहला शतक जड़ा। नरेन ने 56 गेंदों पर 13 चौकों और छह छक्कों की मदद से 109 रन बनाए। नरेन के करियर का यह किसी भी प्रारूप में पहला सैकड़ा है।

नरेन केकेआर के लिए आईपीएल में शतक जड़ने वाले तीसरे बल्लेबाज बन गए हैं। उनसे पहले सिर्फ ब्रेंडन मैकुलम और वेंकटेश अय्यर ने ही इस फ्रेंचाइजी के लिए शतक लगाया था।

नरेन ने मिस्ट्री स्पिनर से लेकर बल्लेबाज तक का सफर तय किया

नरेन लंबे समय से केकेआर के साथ जुड़े हुए हैं। नरेन ने 2012 और 2014 में टीम की खिताबी जीत में अहम भूमिका निभाई थी। नरेन को केकेआर ने स्पिनर के तौर पर टीम में शामिल किया था। वह अपने अलग अंदाज के कारण मिस्ट्री स्पिनर के तौर पर पहचाने जाते थे, लेकिन जब गौतम गंभीर टीम के कप्तान थे तो उन्होंने नरेन को ओपनिंग के तौर पर उतारने का प्रयोग किया। गंभीर का यह प्रयोग काफी हद तक सफल रहा और नरेन टीम को तेज शुरुआत दिलाते रहे।

हालांकि गंभीर के टीम छोड़ने के बाद नरेन की बल्लेबाजी फीकी पड़ गई और वह ऊपरी क्रम में उतरने लगे। केकेआर ने आईपीएल के मौजूदा सीजन से पहले गंभीर को मेंटर के तौर पर टीम में शामिल किया और नरेन को फिर सलामी बल्लेबाज के तौर पर उतारा। नरेन मौजूदा आईपीएल में अब तक 2, 47, 85, 27, 6 और 109 रनों की पारी खेल चुके हैं। नरेन पिछले साल 14 मैचों में सिर्फ 21 रन ही बना पाए थे और उनका सर्वोच्च स्कोर नाबाद सात रन था, लेकिन इस साल सिर्फ छह मैचों में उन्होंने 187.76 के स्ट्राइक रेट से 276 रन बना लिए हैं जिसमें एक अर्धशतक और एक शतक शामिल हैं। इतना ही नहीं नरेन ऑरेंज कैप की दौड़ में भी शामिल हो गए हैं।

मैकुलम और वेंकटेश अय्यर के क्लब में शामिल हुए नरेन

नरेन ने राजस्थान के खिलाफ शानदार बल्लेबाजी की जिसकी मदद से केकेआर ने 20 ओवर में छह विकेट पर 223 रन बनाए। नरेन केकेआर के सिर्फ तीसरे बल्लेबाज हैं जिन्होंने इस फ्रेंचाइजी के लिए शतक जड़ा है।

इतना ही नहीं नरेन केकेआर के लिए सबसे ज्यादा रन बनाने वाले दूसरे बल्लेबाज बन गए हैं। उनसे पहले पिछले साल वेंकटेश अय्यर ने मुंबई इंडियंस के खिलाफ वानखेड़े में खेले गए मुकाबले में 104 रनों की पारी खेली थी। वेंकटेश 16 वर्ष बाद केकेआर के लिए सैकड़ा जड़ने वाले खिलाड़ी बने थे क्योंकि उनसे पहले ब्रेंडन मैकुलम ही एकमात्र बल्लेबाज थे जिन्होंने केकेआर के लिए शतक जड़ा था। मैकुलम ने आईपीएल के पहले सीजन के पहले ही मैच में रॉयल चैलेंजर्स बैंगलुरु (आरसीबी) के खिलाफ नाबाद 158 रनों की पारी खेली थी।

दी नेक्स्ट पोस्ट

स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक बृजेन्द्र कुमार द्वारा फाइन ऑफसेट प्रिन्टर्स मदरसा हुसैनिया बिल्डिंग बक्सीपुर गोरखपुर से मुद्रित एवं 665 बी गंगा टोला, निकट जानकी बिल्डिंग मैटेरियल बसारतपुर पश्चिमी, गोरखपुर से प्रकाशित। पिनः— 273003

Tital code: UPHIN51019

बृजेन्द्र कुमार
मो0. नं0. 7307180148,9170772370
Email- thenextpost01@gmail.com

नोटः- समाचार पत्र से सम्बन्धित सभी वाद-विवाद गोरखपुर जिला न्यायालय के अन्तर्गत मान्य होगे।